पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-६, दिसम्बर, सन्-२०१८, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १९४, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११९; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

शबरीमाला प्रकरण

मंदिर प्रवेश से स्त्रियों को रोकना ईश्वर की अवमानना है !

ईश्वर स्त्री–पुरुष में भेद नहीं करता!

-हृदय नारायण दीक्षित-

माँ सर्वोत्तम अनुभूति है। यह जननी है और स्त्री है। प्रकृति सदा से है। दिव्य भी है। प्रकृति में जहाँ-जहाँ दिव्यता है वहाँ-वहाँ देवता की अनुभूति है। देवता प्रकृति की दिव्य शक्तियां हैं। हम हिंदू अवतारवाद के विश्वासी हैं। संसार में अवतरित होने के लिए ईश्वर भी एक माँ को ही माध्यम बनाता है। हम सब माँ का विस्तार हैं। माँ न होती तो हम न होते। ऋग्वैदिक पूर्वजों ने पृथ्वी को भी माता जाना था। ज्ञान के प्रथम मुहूर्त से लेकर आधुनिक काल तक भारत में स्त्री सम्मान की परम्परा है बावजूद इसके केरल के शबरीमाला मंदिर में १० वर्ष से ५० वर्ष की उम्र वाली महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। सर्वोच्च न्यायापीठ इस मामले पर विचार कर रही है। प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्र के नेतृत्व वाली पांच सदस्यीय पीठ के सम्मुख एक बेतुकी दलील भी पेश की गई है। मंदिर की ओर से पैरवी कर रहे वकील कैलाश नाथ पिल्लई ने कहा है कि 'पुराने रीति रिवाजों में हस्तक्षेप से 'एक और अयोध्या' विवाद जैसा तनाव पैदा हो सकता है।' मंदिर में भगवान अय्यप्पा की आराधना होती है। हिंदू उनके प्रति श्रद्धालु हैं। यहाँ लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष आते हैं। अय्यप्पा का दर्शन करते है, लेकिन १० वर्ष से ५० वर्ष के बीच की महिलाएं उपासना के संवैधानिक अधिकार से वंचित हैं।

शबरीमाला मंदिर का आकर्षण रम्य है। १८ पर्वतों से आच्छादित इस मंदिर को सघन हरीतिमा वाले वन और भी सुंदर तीर्थ बनाते हैं। पूर्वजों ने बहुत सोच समझकर ऐसे दिव्य क्षेत्रों में उपासना केंद्र बनाए थ। परंपरा के अनुसार शबरी माला यात्रा के पूर्व अनेक 'वृतम' यानी व्रत लेने होते हैं। रूद्राक्ष या तुलसी की माला पहनना एक व्रत है। शुद्ध शाकाहार भी व्रत है। क्रोध पर संयम विशेष व्रत है। मंदिर के अधिवक्ता ने सुप्रीम कोर्ट में इस व्रत का पालन नहीं किया। अयोध्या तनाव की दलील संयमहीनता का ही परिणाम जान पड़ती है। संविधान का अनुच्छेद २५ मौलिक अधिकार है। इस अनुच्छेद में 'सभी व्यक्तियों को अंतः करण की स्वतंत्रता और धर्म के अबाध रूप में मानने व आचरण करने का समान अधिकार' है। मंदिर प्रवेश और दर्शन संवैधानिक अधिकार है। परमात्मा/ईश्वर या देवता स्त्री पुरुष में भेद नहीं करते। भगवान अय्यप्पन श्रद्धेय हैं। वे सबके हैं, सब उनके हैं। सृष्टि संबन्धी दो मूल विचार हैं। पहला कि सृष्टि ईश्वर ने बनाई। तब सृष्टा अपने ही सृजन के एक बड़े भाग के प्रति विभेदक नहीं हो सकता। सृष्टि प्राकृतिक विकास का परिणाम भी मानी जाती है। सृष्टि विकास की कार्रवाई से स्त्री को अलग रखकर संसार चक्र आगे नहीं चल सकती है। संस्कृत भाषा अनुशासन में 'देवता' स्त्रीलिंग है।

शबरीमाला में महिलाओं का प्रवेश रोकने का आधार बेतुका है। माना जाता है कि १० से ५० वर्ष की उम्र की महिलाएं रजस्वला होती हैं और रजस्वला महिलाएं अपवित्र होती हैं। इसलिए इस उम्र की महिलाएं मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकतीं। यह धारणा किसी व्यक्ति का निजी विचार ही हो सकती है। इस मान्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। वैदिक साहित्य महिलाओं की समान भागीदारी से भरापूरा है। ऋग्वेद के ऋषियों ने जल को 'आपःमातरम्' माता रूप विश्व की जननी बताया था। उन्होंने नदियों को भी माता ही कहा था। महिलाएं अपवित्र होतीं तो माता कहने का प्रश्न ही नहीं था। ऋग्वेद में मंत्र सूक्तों में ऋषियों के नाम हैं। तमाम सूक्तों की रचनाकार महिलाएं भी हैं। पहले मंडल के सूक्त १२६ के ५ मंत्रों की ऋषिका रोमशा हैं। दसवें मण्डल के सूक्त ४० की ऋषिका काक्षीवती घोषा भी महिला हैं। लोपामुद्रा भी ऋषिका महिला है। दसवें मण्डल के सूक्त ८५ में सावित्री सूर्या के मंत्र हैं। यमी वैवस्तवी भी मंत्र द्रष्टा हैं। ऋग्वेद भारतीय संस्कृति का आदि स्रोत है। इसमें महिला ऋषियों की भागीदारी है। ये अपवित्र होतीं तो वैदिक मंत्रों की द्रष्टा कैसे होतीं? रजस्वला होना निजी चयन नहीं है। यह प्राकृतिक कार्रवाई है और प्रकृति अपनी सृजन कार्यवाही में अपवित्र नहीं होती।

हिंदू धर्म में यज्ञ एक प्राचीन संस्था व कर्त्तव्य है। यज्ञ पवित्र अनुष्ठान है। शास्त्रों के अनुसार इस कर्मकांड में पत्नी की उपस्थिति अनिवार्य है। ऋग्वेद (८. ३१.५) में कहते हैं कि 'पति-पत्नी मिलकर एक मन से देव उपासना करते हैं।' देवोपासना में पत्नी साथ है। उसकी रजस्वला प्रकृति देव उपासना में बाधक नहीं है। ऋग्वेद (१.११२.१०) के अनुसार विपश्ला का पैर युद्ध में कट गया था। अश्विनी देवों ने कृत्रिम पैर लगाया था। इसी तरह (१०.१०२.२) रथ सवार मुद्गलानी ने युद्ध में संपदा जीती थी। उत्तर वैदिक काल में गार्गी ने दार्शनिक याज्ञवल्क्य से तमाम प्रश्न किए। निरुत्तर याज्ञवल्क्य ने गार्गी पर अतिप्रश्न पूछने का आरोप लगाया था। इन्हीं याज्ञवल्क्य ने मैत्रेयी की शंका का समाधान करते हुए लोक व्यवहार का आत्मदर्शन दिया था कि 'इस संसार में सब स्वयं को ही प्यार करते हैं।' वैदिक काल में विद्वत गोष्ठियों, सभी समितियों या देवोपासना में भी महिलाएं भागीदार थीं। उपासना के अधिकार पर कोई रोक नहीं थी।

भारत में लाखों मंदिर हैं। पुरुषों की तुलना में स्त्रियां मंदिर अधिक जाती हैं। देवोपासना करती हैं। कहीं ऐसी रोक नहीं है, लेकिन शबरीमाला मामले में कुतर्क दिए गए। कहा गया कि 'न्याय से जुड़ा व्यक्ति होने के कारण भगवान अय्यप्पन को संविधान के अधीन अपने ब्रह्मचारी चरित्र को सुरक्षित रखने का अधिकार है। उनकी मानें तो भगवान अय्यप्पन भी महिलाओं का प्रवेश नहीं चाहते। हिंदू संस्कृति में देवों या ईश्वर का प्रवक्ता बनने की परम्परा नहीं है, लेकिन यहाँ भगवान अय्यप्पन की निजी इच्छा भी बताई जा रही है। उपनिषदों में सृष्टि रचना के कई रूपक हैं। उपनिषद के अनुसार 'परमात्मा अकेला था। उसे आनंद नहीं आया-तस्मात् एकाकी न रमते। उसने दूसरे की इच्छा की और स्वयं दो खंडों में विभाजित हो गया। आधा भाग स्त्री हुआ और आधा पुरुष।' स्त्री परमसत्ता का आधा भाग है, लेकिन जननी होने के कारण वह प्रतिपल श्रद्धेय है और सृष्टि सृजन की आधारभूत धुरी है। उसे किसी भी आधार पर श्रेय कर्म से वंचित करना ईश्वर और प्रकृति की अवमानना है।

शास्त्र और रीति रिवाज देशकाल और परिस्थिति की उपज हैं। देवोपासना से स्त्रियों का रोका जाना शास्त्रीय नहीं है। मान लिया कि किसी परिस्थिति में किसी व्यक्ति ने ऐसी कोई उपधारणा विकसित भी की हो तो भी इक्कीसवीं सदी के विश्व और तर्कशील भारत में ऐसी उप धारणा को महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिए। संविधान भारत का राजधर्म है। यह वंश, जाति या लिंग जैसे सभी भेदों का निषेध करता है। न्यायमूर्तियों के अद्यतन संकेत स्वागतयोग्य हैं। मुख्य न्यायाधीश ने सही कहा है 'न्यायपीठ इस तथ्य को नकार नहीं सकती कि महिलाओं के एक वर्ग को शारीरिक कारणों से मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई है।' भारत तमाम रूढ़ियां छोड़ चुका है। सतीप्रथा मर गई है। अस्पृश्यता का अंत हो चुका है। जातियां मरणासन्न हैं। स्त्रियां राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी हैं। सभी कालवाह्य रीतिरिवाजों का त्याग देशकाल का आह्वान है। प्राचीन इतिहास में स्त्री आदर के जीवंत साक्ष्य हैं। आधुनिक भारत का निर्माण उसी नींव पर होना चाहिए।

हृदय नारायण दीक्षित

(लेखक उ.प्र.विधानसभा के अध्यक्ष हैं)

-'दैनिक जागरण' से साभार

विनय पीयूष

दिन रहते घर आ जाना, प्रिय!

व्रेशीनां त्वा पत्मन्नाथूनोमि कुकूननानां त्वा पत्मनथूनोमि। भन्दनानां त्वा पत्मन्नाथूनोमि मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाथूनोमि। मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाथूनोमि शुक्रं त्वा शुक्रऽआथूनाम्यन्हो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु।।

(यजु. : 8/48)

दिन रहते घर आ जाना प्रिय,
करने को अभिसार!

जल सी निर्मल तृप्तिप्रदा
परियों से रहना दूर,
बचना रूपसियों से, जिनके
वचन मधुर भरपूर!
कृपा लुटाती सुंदरियों के,
पाशों में मत फंसना,
सुख की छलना वाले
दुःख के दलदल में मत धंसना!

जहाँ-तहाँ चितचोर, अधर्मी,
नहीं लुटाना प्यार!
दिन रहते घर आ जाना प्रिय,
करने को अभिसार!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

हार नहीं मानूँगा - अटल

'हार नहीं मानूँगा'-जैसी अमर पंक्ति के रचयिता और गायक अटल बिहारी वाजपेयी के सम्बन्ध में किसी पत्रकार अथवा लेखक से यह कहते हुए सुना कि अटल जी भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह थे। मेरी राय में अटलजी को भीष्म पितामह कहना किसी भी प्रकार उचित नहीं है। इसके कई कारण हैं। पहला तो यह कि अटल जी आजीवन अविवाहित अवश्य रहे किन्तु इसके पीछे वह कारण नहीं था; जो भीष्म के अविवाहित रहने में था। अटल जी ने संघ की विचारधारा और कार्यशैली से अनुप्रेरित होकर अविवाहित रहने का फैसला किया था। उस समय रा.स्व.से.संघ में देश और समाज के लिए जीवन अर्पित करने वाले योग्य नवयुवकों की खोज हो रही थी- उसी खोज में अटल जी और पं.दीनदयाल उपाध्याय के नाम सामने आये। किन्तु भीष्म के अविवाहित रहने का कारण- राज्य के उत्तराधिकार की समस्या से संबन्धित था- यह सभी जानते हैं। दूसरा अन्तर यह है कि शर शैय्या पर पड़े हुए भीष्म को द्रौपदी के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहना पड़ा था- 'अर्थस्य पुरुषो दासः' अर्थात् मनुष्य अर्थ का दास है। न चाहते हुए भी उन्होंने अन्यायी दुर्योधन का साथ दिया था किन्तु अटल जी ने कभी अन्याय का पक्ष नहीं लिया- वे न्याय और सत्य के मार्ग पर अडिग रहे। कोई प्रलोभन उन्हें न्याय के मार्ग से नहीं डिगा पाया। लोकसभा में अपने नेतृत्व में गठित पहली त्रयोदश दिवसीय सरकार का त्यागपत्र देने के पूर्व उनका संसद में दिया गया भाषण इसका ज्वलंत प्रमाण है।

अटल जी भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह नहीं वरन् धनुर्धर पार्थ थे! उनकी वाणी गाण्डीव की टंकार थी। शरवृष्टि थी उनकी मर्मभेदी शब्दावली। उनका उद्घोष था 'न दैन्यं न पलायनं'। जीवन पर्यन्त अंतिम सांस तक उन्होंने उपर्युक्त उक्ति को चरितार्थ किया। वे मौत को भी ललकारने वाले योद्धा थे- 'मौत से ठन गई'- शीर्षक कविता मृत्यु से कई वर्ष पूर्व वे लिख चुके थे।

भारतीय राजनीति के इस शीर्ष पुरुष के योद्धा रूप का साक्षी मैं सन् १९६६ में बना। गोरक्षा आन्दोलन जोरों पर था। १९६७ का आम चुनाव सर पर था। तभी पंडित दीनदयाल उपाध्याय आकस्मिक रूप में विदा हो गए। भारतीय जनसंघ का प्रत्येक सदस्य तथा देश का आम नागरिक शोकसंतप्त और अवसादग्रस्त था। वैसी ही मुर्दनी छायी हुई थी जैसी द्वापर युग में अभिमन्यु की मृत्यु के बाद पाण्डव पक्ष में व्याप्त थी। निराशा और दुःख के वातावरण में कुछ क्षणों के लिए अपनी यात्रा के मध्य मऊनाथ भंजन में अटल जी रुके तो अच्छी भीड़ उन्हें सुनने के लिए एकत्र हो गई थी। अटल जी का वह वाक्य आज भी रह रहकर मेरे मन में कौंध जाता है और उनकी अप्रतिम नेतृत्व क्षमता का उदाहरण पेश करता है-'यह वह देश है जहाँ सिर विहीन धड़ में हाथी का सिर जोड़ कर उसे गणेश का रूप दे दिया जाता है।'

उन दिनों मैं राजनीति में सक्रिय था और स्वयं पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने १९६७ के विधान सभा चुनावों के लिए रानी की सराय, आज़मगढ़ सीट से मेरी उम्मीदवारी पर मोहर लगा दी थी। गोरक्षा के विशाल आन्दोलन की रैली संसद भवन पर आयोजित थी। संसद भवन के सामने विशाल मंच था और सड़कों पर अपार जनसमूह मौजूद था। संयोग वश आजमगढ़ से जाने वाली एक बस से मैं भी पहुँचा और इस लोमहर्षक दृश्य का साक्षी बना। इतना उमड़ता हुआ जनसमूह इससे पहले मैंने कभी देखा नहीं था। जब मैं सभास्थल पर पहुँचा तो इतनी दूरी पर मुझे स्थान मिला था; जहाँ से मंच का दृश्य बमुश्किल दिखाई देता था। मैं पहुँचा तो अटल जी ही बोल रहे थे। मंच से उनके मुख से मैंने इतना ही सुना-'देखो, साधु-संतों पर लाठी चार्ज हो रहा है' और सचमुच धाँय धाँय की आवाजें आने लगीं। आँसू गैस के गोले दगने लगे- जनता से तितर बितर होने को कहा जाने लगा और सरकार की ओर से घोषणा की गई- सभी आन्दोलनकारी दिल्ली अविलम्ब छोड़ दें। चारों ओर धुआँ ही धुआँ था और पानी के टैंकर सड़कों पर दौड़ रहे थे। उसी भीड़ में मैं भी था। कब क्या हो जाय, कहना कठिन था। अटल जी के वीरतापूर्ण नेतृत्व ने भारतीय जनसंघ को अच्छी सफलता दिलाई थी।

ओज और दीप्ति तथा वाणी के वरदानों से विभूषित इस योद्धा का अतिथि बनने का सौभाग्य भी मुझे मिला। १९६० में अटल जी सांसद थे और आडवाणी जी के साथ दोनों एक ही बंगले में रहते थे। लखनऊ विश्वविद्यालय से अखिल भारतीय आकाशवाणी परिसंवाद प्रतियोगिता में उ.प्र.का प्रतिनिधित्व करने वाले चार सदस्यीय दल का एक सदस्य मैं भी था। मेरे अलावा तीन सदस्य भैरव दत्त शुक्ल, हरिनाथ तिलहरी(जो बाद में न्यायाधीश बने) तथा विजय विधाव्रत। विजय जी संघ के जाने माने कार्यकर्ता थे- उन्हीं की व्यवस्थानुसार हम लोगों को अटल जी के आवास पर जाने और ठहरने का मौका मिला। अटल जी के बंगले में हमारे रहने के लिए कक्ष, बिस्तर, जलपान भोजन- सभी व्यवस्थायें थीं। अटल जी के साथ जलपान करने, भोजन करने तथा वार्तालाप करने का स्वर्गीय सुख मिला। आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र पर राष्ट्रकवि मैथिलीशर गुप्त के कर कमलों से पुरस्कार व प्रमाणपत्र लेकर हमलोग अगले दिन पुरस्कार का चेक कैश कराने स्टेट बैंक जा रहे थे कि मार्ग में अटल जी लोकसभा की बैठक से वापस आते हुए पैदल ही रास्ते में मिले। दौड़कर हमलोगों ने उनका अभिवादन किया आशीर्वाद लिया और अपनी सफलता की गाथा भी उन्हें सुनाई। अटल जी ने शाबाशी दी। उनके आशीर्वाद की पूँजी आज भी मेरे साथ है।

विनय कुमार सिंह

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१९०

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

(उत्तर) हम इस स्वप्रकाशस्वरूप अनादि सदा मुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें जो हम को मुक्ति में आनन्द भुगा कर पृथिवी में पुनः माता पिता के सम्बन्ध में जन्म देकर माता पिता का दर्शन कराता है। वही परमात्मा मुक्ति की व्यवस्था करता सबका स्वामी है।।2।।

जैसे इस समय बन्ध मुक्त जीव है। वैसे ही सर्वदा रहते हैं, अत्यन्त विच्छेद बन्ध मुक्ति का कभी नहीं होता किन्तु बन्ध और मुक्ति सदा नहीं रहती।

(प्रश्न) तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।

दुःखजन्मप्रवृत्ति दोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः।।न्याय सू.।।

जो दुःख का अत्यंत विच्छेद होता है वही मुक्ति कहाती है क्योंकि मिथ्या ज्ञान अविद्या, लोभादि दोष, विषय दुष्ट व्यसनों में प्रवृत्ति, जन्म और दुःख का उत्तर-उत्तर के छूटने से पूर्व-पूर्व के निवृत्त होने ही से मोक्ष होता है जो कि सदा बना रहता है।

(उत्तर) यह आवश्यक नहीं है कि अत्यन्त शब्द अत्यन्ताभाव ही का नाम होवे। जैसे 'अत्यन्तं दुःखमत्यन्तं सुखं वर्त्तते' बहुत दुःख और बहुत सुख इस मनुष्य को है। इससे यही विदित होता है कि इसको बहुत सुख वा दुःख है। इसी प्रकार यहां भी अत्यंत शब्द का अर्थ जानना चाहिये।?

मुक्ति और बंध

(प्रश्न) जो मुक्ति से भी जीव फिर आता है तो वह कितने समय तक मुक्ति में रहता है?

(उत्तर) ते ब्रह्मलोके ह परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे।

यह मुण्डक उपनिषद् का वचन है- वे मुक्त जीव मुक्ति में प्राप्त होके ब्रह्म में आनन्द को तब तक भोग के पुनः महाकल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को छोड़ के संसार में आते हैं। इसकी संख्या यह है कि तेंतालीस लाख बीस सहस्र वर्षों की एक चतुर्युगी, दो सहस्र चतुर्युगियों का एक अहोरात्र, ऐसे तीस अहोरात्रों का एक महीना, ऐसे बारह महीनों का एक वर्ष, ऐसे शत वर्षों का परान्तकाल होता है। इसको गणित की रीति से यथावत् समझ लीजिए। इतना समय मुक्ति में सुख भोगने का है।

(प्रश्न) सब संसार और ग्रन्थकारों का यही मत है कि जिससे पुनः जन्म मरण में कभी न आवें।

(उत्तर) यह बात कभी नहीं हो सकती क्योंकि प्रथम तो जीव का सामर्थ्य शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित हैं पुनः उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द भोगने का असीम सामर्थ्य; कर्म और साधन जीवों में नहीं इसलिये अनन्त सुख नहीं भोग सकते। जिनके साधन अनित्य हैं उनका फल नित्य कभी नहीं हो सकता। और जो मुक्ति में से कोई भी लौट कर जीव इस संसार में न आवे तो संसार का उच्छेद अर्थात् जीव निश्शेष हो जाने चाहिए।

(प्रश्न) जितने जीव मुक्त होते हैं उतने ईश्वर नये उत्पन्न करके संसार में रख देता है इसलिये निश्शेष नहीं होते।

(उत्तर) जो ऐसा होवे तो जीव अनित्य हो जायें क्योंकि जिसकी उत्पत्ति होती है उसका नाश अवश्य होता है फिर तुम्हारे मतानुसार मुक्ति पााकर भी विनष्ट हो जायें। मुक्ति अनित्य हो गई और मुक्ति के स्थान में बहुत सा भीड़ भड़क्का हो जायेगा क्योंकि वहां आगम अधिक और व्यय कुछ भी नहीं होने से बढ़ती का पारावार न रहेगा और दुःख के अनुभव के बिना सुख कुछ भी नहीं हो सकता। *(क्रमशः)*

वेदांजलि

देशोत्थान के उपाय

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तर्ते श्रिता।।

–अथर्व. 12/5/1

शब्दार्थ–

प्रभु मनुष्यमात्र को आज्ञा देते हैं कि तुम सब सदा (**श्रमेण**) पश्रिम से तथा (**तपसा**) धर्मपालन और संयम से (**सृष्टाः**) संयुक्त रहो, (**ब्रह्मणा**) परमात्मविश्वास और विज्ञान से भी उन्नत होते हुए (**ऋते**) पक्षपातरहित न्यायपूर्वक (**वित्ते**) धनादि भोग-पदार्थों की प्राप्ति में (**श्रिताः**) सदा चलनेवाले बनो रहो।

व्याख्या–

मंत्र में पहली बात कही गई है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को परिश्रमी होना चाहिए। जिस देश के लोग उद्यम और परिश्रम से कतराएँ, वह देश सदा दरिद्र और पिछड़ा रहेगा। दुर्भाग्य से हमारे देश में भी यह दुर्गुण वास्तविक शिक्षा के अभाव से तथा लम्बी दासता के कारण समाज में घर कर गया है। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति काम से बचना चाहता है। पढ़ाई-लिखाई का उद्देश्य भी यही समझा जाता है कि इसके सहारे, बिना परिश्रम के अथवा कम श्रम करके अधिक धन कमाया जा सकता है और उस धन से विपुल उपभोग की सामग्री जुटाई जा सकती है।

भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि दी है, ताकि वह अपनी कठिनाइयों को समझ कर उन्हें दूर करने का उपाय सोचे। उसे हाथ और समर्थ शरीर इसलिए दिया है कि विचारी हुई बात को परिश्रम करके सफल बनाए। इस सम्बन्ध में वेद की महत्त्वपूर्ण शिक्षा है। यजुर्वेद के 40वें अध्याय के दूसरे मंत्र में परामर्श है कि- "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः" अर्थात् 'मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे।' अथर्ववेद में उपदेश है-"कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः"- यदि पुरुषार्थ मेरे दाएँ हाथ में है, तो सफलता बाएँ हाथ का खेल है।

यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति। यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।। (ऋ.५.४४.१४)

'जो जागते रहते हैं, अर्थात् परिश्रम करते हैं, उन्हें ही ऋचाएँ चाहती हैं। जो परिश्रम करते हैं, उन्हीं के पास साम पहुँचते हैं, अर्थात् उनका ही सामवेद पढ़ना सार्थक है। जो उद्योगपरायण हैं, प्रभु उन्हीं का मित्र है।' ऋग्वेद 4.33.11 में कहा है-"न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः"-जो श्रम से थककर चूर नहीं हो जाते, देव उनके मित्र नहीं बनते।

मंत्र की दूसरी बात है-राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को तपस्वी होना चाहिए। 'तप' शब्द भी हमारे साहित्य और व्यावहारिक जीवन में अति प्रचलित है। शास्त्रों में भिन्न भिन्न स्थानों पर तप की भिन्न भिन्न परिभाषाएँ भी की गई हैं। किन्तु तप का मूलगत भाव है-'द्वन्द्वसहिष्णुत्व'- सुख-दुःख, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, हानि लाभ, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि इस प्रकार के जितने भी 'द्वन्द्व' अर्थात् जोड़े बनते हैं, उनमें विचलित न होकर कर्त्तव्य कर्म करते चले जाना तप है। इस तप का आध्यात्मिक और लौकिक दोनों प्रकार से महत्त्व है। आध्यात्मिक क्षेत्र में इस द्वन्द्व-सहन से मन की शुद्धि होती है और व्यावहारिक जगत् में इस तप से कर्मठता की भावना बद्धमूल होकर लोक कल्याण का प्रसाधन बनती है। अतः शास्त्रवर्णित उन अनेक तप के भावों में से मैं अपने प्रतिपाद्य विषय के अनुकूल तप के दो भावों को चुनता हूँ-प्रथम, महाभारत में युधिष्ठिर के द्वारा दिये गए यक्ष के उत्तर को, और द्वितीय-आचार्य चाणक्य द्वारा अपने सूत्र में वर्णित परिभाषा को। महाभारत में एक लम्बी प्रश्नावलि युधिष्ठिर से पूछी है यक्ष ने और युधिष्ठिर ने उसके उत्तर दिये हैं। यक्ष का एक प्रश्न है-'तप का क्या लक्षण है?' युधिष्ठिर ने इसका उत्तर दिया है-'तपः स्वकर्म वर्तित्वम्'।-अपने कर्तव्य का पालन करना ही तप है। किन्तु इस लक्षण की पूर्ति अथवा पुष्टि तबतक नहीं हो सकती, जब तक कि आचार्य चाणक्य का सूत्र इसके साथ न जुड़े। आचार्य चाणक्य ने लिखा है-'तपः सार इन्द्रियनिग्रहः'-तपस्या का सार जितेन्द्रियता है। जो जितेन्द्रिय नहीं है, वह सिर और धड़ की बाजी लगाकर कर्तव्य पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। उसे संसार के प्रलोभन कर्तव्य विमुख कर देंगे और इसी प्रकार मार्ग में आया हुआ संकट भी उसे पथभ्रष्ट कर देगा।

तीसरे नम्बर पर मंत्र में हैं-'ब्रह्मणा'। ब्रह्मणा के अनेक अर्थों में से यहाँ मुझे अभिप्रेत है आस्तिकता। राष्ट्र की उन्नति के लिए उसके नागरिकों को आस्तिक और धार्मिक होना चाहिए। इस भावना के बिना उसका आचार शुद्ध रहना कठिन ही नहीं, असम्भव है।

मंत्र की चौथी बात है-'वित्त ऋते श्रिताः'-'भोगने योग्य समस्त धनादि पदार्थों को न्यायपूर्वक कमावें और न्यायपूर्वक ही उनका उपभोग करें।' जहाँ नागरिकों में यह भावना होगी, वहाँ अनावश्यक असन्तुलन नहीं होगा। एक ओर उपभोग की असीम सामग्री और दूसरी ओर पेट भरने को रोटी नहीं, तन ढकने को वस्त्र नहीं, सिर छुपाने को झोंपड़ी नहीं-ऐसे राष्ट्र में शान्ति नहीं हो सकती।

अतः राष्ट्रोन्नति का यही वेदोक्त मार्ग है, अन्य नहीं। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११४

नमस्तुभ्यं देव ! त्वमसि वरदानं कुसुमये
विपत्काले क्षीणं वितरसि बलं जीवयसि नः।
मुने ! स्फूर्तिं दत्वा विशदसुपथं दर्शयसि च
वयं खिन्ना खिन्ना : पुनरपि सुमार्गेषु गमिताः।।

हे देव ! हे दयानन्द !
हम तुम्हें प्रणाम करते हैं।
तुम बहुत खराब समय में
हमारे लिये वरदान बनकर आये !!
विपत्ति-काल में जब हम
क्षीण हो चुके थे, तब
हमें शक्ति दी तुमने और
पुनर्जीवित किया !!!
हे मुनि !
हमारे मनों में सफूर्ति भर कर
तुमने सुमार्ग भी दिखाया है।
हम थके-थके से फिर से
तेरी प्रेरणा से चल पड़े हैं।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

अटल-जयन्ती पर विशेष

स्मृति शेष अटल जी

-प्रेमचन्द शर्मा

मैंने जन्म नहीं माँगा था,
किन्तु मरण की माँग करूँगा!
जाने कितनी बार जिया हूँ
जाने कितनी बार मरा हूँ।
जन्म मरण के फेरे से मैं
इतना पहले नहीं डरा हूँ।
अंतहीन अंधियार ज्योति की,
कब तक और तलाश करूँगा!
मैंने जन्म नहीं माँगा था,
किन्तु मरण की माँग करूँगा!

कविता के चर्चित हस्ताक्षर, सांस्कृतिक निबन्धों के प्रणेता, पुराने खोजी सम्पादक, राजनीति के शीर्ष पुरुष और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व.अटल जी का व्यक्तित्व काव्य और राजनीति का एक समन्वित रूप है। शब्द की शक्ति-सामर्थ्य उसमें अंतर्निहित अर्थ में उतनी ही होती है जितनी वक्ता की कथनी और करनी के एकात्म में होती है। यदि वक्ता अपनी कथनी और करनी के एकात्म से उत्पन्न अन्तर्दृष्टि के कारण जो देखता है वही बोलता है और जो बोलता है वही करता है तब उसके शब्दों की सामर्थ्य, गीत, त्वरा और परिवर्तन की शक्ति अत्यधिक प्राणवान ऊर्जावान हो जाती है। यह शब्द-सामर्थ्य एवं आकर्षण जिस विभूति में थी उसी का नाम था- स्व. अटल। हर शब्द में सम्मोहन, फूलों के पास से कोई भी निकले सुगन्ध बिना नहीं रह सकता चाहे पक्ष या प्रतिपक्ष। समग्रता की गन्ध अटल के शब्दों में थी। उनके शब्द अमृत वर्षा में स्नान का आनन्द भी देते थे। भारतीय राजनीति अटल जी को पाकर प्रखर हुई, प्रबल हुई और शब्दरूप से परिभाषित हुई- 'यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षुषि पश्यति'(केन १,६) परमात्मा चक्षु द्वारा नहीं दिखता अपितु जिस परम शक्ति से चक्षु में देखने का सामर्थ्य आता है उसे ही परमात्मा कहा जाता है। इसी प्रकार जिनके शब्दबाणों को सुनकर विपक्षी भी हतप्रभ रह जये उसकी का नाम अटल था। यदि भारतीय लोकतंत्र के प्रति कहें तो भारतीय लोक तंत्र उनको पाकर पोषित हुआ और पोषित ही नहीं गौरवान्वित भी हुआ- 'तस्य भाषा सर्वमिदं विभाति'(कठ-२,१५) उसी प्रभु के प्रकाश से यह सब प्रकाशित हो रहा है। इसी प्रकार भारतीय संसद में जब वे स्वयं बोलने हेतु उद्यत होते थे तो पूर्ण संसद मन से सुनकर आह्लादित होती थी।

हिन्दी प्रेम-२० अप्रैल १९९३ में कानपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया तथा हिन्दी संस्थान ने उन्हें २८ सितम्बर १९९२ में 'हिन्दी गौरव' के सम्मान से उनकी विशिष्ट हिन्दी सेवाओं के लिए अलंकृत किया। इस अवसर पर उन्हें ५१०००रु. की धनराशि भी भेंट की गई जिसे उन्होंने तुरन्त उसी राशि को दुगनी कर हिन्दी संस्थान को हिन्दी के विकास हेतु अर्पित कर दिया। १९९४ में उन्हें पं.गोविन्द वल्लभ पंत संस्थान द्वारा श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार भी प्रदान किया गया। विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना पहला विस्तृत भाषण वहाँ की संसद में हिन्दी में वर्ष १९७८ में १० अक्टूबर को दिया था।

प्रारम्भिक जीवन-उनका किशोर काल का प्रारम्भ आर्य कुमार सभा से प्रारम्भ होकर स्वामी दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के पश्चात् स्वयं प्रेरित होकर वर्ष १९४२ में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में शामिल हुए और स्वतंत्रता आन्दोलन में सम्मिलित होकर वर्ष १९४२ में प्रथम बार आगरा में गिरिफ्तार किये गये और उन्हें बच्चा बैरक में रखा गया। श्री अनुपम खेर को दूरदर्शन पर दिये गये साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि १५ अगस्त १९४७ में भारत के आजाद होने पर मेरी एक आँख हंस रही थी क्योंकि भारत आजाद हो गया था जबकि दूसरी आँख रो रही थी क्योंकि भारत बंट गया था।

अस्तु ऐसे देश प्रेमी, कवि-हृदय, श्रेष्ठ सांसद, पद्म विभूषण, लोकतंत्र प्रेमी कर्मठ देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी, अजातशत्रु, भारतरत्न स्व.अटल जी को श्रद्धान्वत् होकर भावभीनी श्रद्धांजलि उन्हीं के शब्दों को उद्धृत करके कर रहा हूँ-'हम जियेंगे तो देश के लिए, मरेंगे तो देश के लिए। इस पावन धरती का कंकर कंकर शंकर है, बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है। भारत के लिए हँसते-हँसते प्राण न्योछावर करने में गौरव और गर्व का अनुभव करूँगा।' और यही कारण था कि वे चेतन अवस्था से लेकर अन्त तक भारतके जननायक रहे और लगभग ९-१० वर्ष तक नेपथ्य में चले जाने अथवा रहने के बाद भी भारतीय जनमानस से वह नहीं विदा हुए और इसका प्राकट्य दिनांक १६ अगस्त से १७ अगस्त २०१८ तक उनकी शवयात्रा में उपस्थित अपार जनसमूह था। वे इतने देश-विदेश में प्रिय हो गये थे कि देश से द्वेष के बाद भी शार्क के सभी प्रतिनिधि, नेपाल, पाकिस्तान, बांगला देश, भूटान, लंका उनकी उनकी अंत्येष्टि में उपस्थित थे।

(15, बहादुर पुर, निकट मायापुरी कालोनी, विकास नगर, लखनऊ-22)

सूचना एवं निवेदन

वर्ष 2018 का समापन हो रहा है; अस्तु, आर्य लोक वार्ता के समस्त सदस्यों एवं स्वाध्याय प्रवीण सहयोग कर्ताओं से विनम्र निवेदन है कि वे अपनी सहयोग राशि यथाशीघ्र उपलब्ध करा दें।

1.सहयोग राशि आप आर्य लोक वार्ता के बैंक खाते में जमा करके हमें सूचना दें। बैंक विवरण पृष्ठ 8 पर अंकित है।

2.लोक प्रचलित नये वर्ष पर हम वैदिक आर्य पर्व पत्रक (कैलेण्डर) प्रकाशित करते हैं जिसमें चालू वर्ष में 1500 या इससे अधिक सहयोगकर्ता दानियों के नाम दान देने की तिथिक्रम के अनुसार प्रकाशित करते हैं। अतः समस्त माननीय होता, ऋत्विक सहयोग कर्ता अपनी सहयोग दान राशि दिनांक 10 जनवरी 2019 तक अवश्य जमा कर दें ताकि उनके नामों का समावेश किया जा सके।

3.चाहें तो कार्यालय आकर (नये कर्यालय का पता पृष्ठ 8 पर अंकित है) अथवा हमारे मान्य स्वाध्याय केन्द्रों के पास जमा करके हमें सूचना अवश्य दें। स्वाध्याय केन्द्राध्यक्षों का विवरण इस प्रकार है- लखनऊ हेतु-सर्वश्री पाल प्रवीण, अलीगंज (7308720581); आत्मप्रकाश बत्रा, आदर्श नगर (9335240899); डोरीलाल आर्य, इन्दिरा नगर (9889090411); आचार्य आनन्द मनीषी, राजाजीपुरम् (9935391794); रामा आर्य 'रमा', चौक (9919790264); बालगोविन्द पालीवाल, गोमती नगर (9792373494); डा.मोहनलाल अग्रवाल, लालबाग (94544711138); गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', आदिल नगर, विकास नगर (9956087585)। सीतापुर हेतु-वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', नई बस्ती (9793296829); शचीन्द्र शास्त्री, (9450379549)। हरदोई हेतु-डा.सत्य प्रकाश, सदर बाजार, सण्डीला (9450858750)। **-सम्पादक**

व्यक्ति-विशेष

लखनऊ की विभूति अजमेर में

श्री लक्ष्मण आर्य मुनि

चैत्र प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाले नवसंवत्सर पर वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ.रूपचन्द्र दीपक, प्रधान, आर्य समाज शृंगार नगर, आलमबाग, लखनऊ द्वारा शतकुंडीय बृहद् यज्ञ का आयोजन प्रतिवर्ष होता है; इस अवसर पर सेवानिवृत्त आर्य पुरुषों को वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा का सुअवसर मिलता है। संवत् २०७३ में लखनऊ के अनेक आर्य पुरुष वानप्रस्थी बने, उनमें एक नाम श्री लक्ष्मण आर्य मुनि का भी है। लक्ष्मण जी सम्प्रति महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की छत्रछाया में १०१, योगमंदिर, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राजस्थान) में निवास कर रहे हैं, यह मेरे लिए सन्तोष की बात है।

वैसे तो अनेक व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर लेते हैं किन्तु उनके आन्तरिक जीवन में शुभ परिवर्तन परिलक्षित नहीं हो पाते जो एक वानप्रस्थ में होने चाहिए। वे छल, दंभ, ईर्ष्या, असत्य, अहंकार इत्यादि का परित्याग नहीं कर पाते किन्तु लक्ष्मण जी ने जब वानप्रस्थ की दीक्षा ली तो उनकी जीवन शैली और प्रकृति में एक बदलाव दिखाई दिया। वे अधिक साधु स्वभाव, सरल और त्याग वृत्ति से पूर्ण प्रतीत हुए। मेरे प्रति भी जो उनका एक उपेक्षा या तटस्थता का भाव था, प्रेमाकर्षण में तब्दील हुआ। अपने पारिवारिक यज्ञ में उन्होंने विशेष आग्रह के साथ बुलाया और आचार्य के रूप में यथोचित सम्मान दिया। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति उनके प्रेम में भी अभिवृद्धि हुई- उन्होंने कई अवसरों पर 'आर्य लोक वार्ता' को आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया।

श्री लक्ष्मण आर्य मुनि के ऋषि उद्यान, अजमेर में रहने और मेरे आत्मसन्तोष अनुभव करने के पीछे कुछ कारण हैं, जिनकी मैं यहाँ चर्चा करना चाहता हूँ। श्री लक्ष्मण आर्य मुनि जी अपने राजकीय सेवाकाल (प्रशासनिक अधिकारी, हिन्दुस्तान फर्टिलाइजर्स) में वे एल.पी.मेढ़ थे। आर्य समाज, वैशाली इन्क्लेव, इन्दिरा नगर, लखनऊ के सदस्य बनने के बाद वे लक्ष्मण प्रसाद आर्य बने और आज वे श्री लक्ष्मण आर्य मुनि के नाम से जाने जाते हैं।

आर्य समाज इन्दिरा नगर का सदस्य होने के साथ ही वे उक्त आर्य समाज के मंत्री, उपमंत्री, प्रधान, उपप्रधान इत्यादि विभिन्न पदों पर भी रहे। इसी आर्य समाज के प्रति मेरा भी सर्वाधिक लगाव रहा। आर्य समाज इन्दिरा नगर के स्थापना काल से ही वहाँ मेरे प्रवचन प्रत्येक महीने में कम से कम एक रविवार को अवश्य होते थे, आर्य समाज का पुरोहित भी कुछ काल तक रहा, वेद प्रचार सप्ताह में भी वेदोपदेशक के रूप में अनेक स्थानों पर मेरे व्याख्यान हुए। 'आर्य लोक वार्ता' से सम्बन्धित कई कार्यक्रम भी मैंने उक्त आर्य समाज में किये तथा श्री डोरीलाल आर्य के संयोजन में संस्कृत सम्भाषण आयोजनों की अध्यक्षता भी की। स्वाभाविक रूप में आर्य समाज इन्दिरा नगर के कई सदस्य मेरे प्रति विशेष श्रद्धा-सम्मान की भावना रखते रहे- स्वर्गीया निर्मल कुमारी तथा उनके पतिदेव श्री नरसिंह पाल एडवोकेट ऐसे ही मेरे स्नेहियों में रहे हैं। जहाँ तक लक्ष्मण प्रसाद जी का संबन्ध है, उनके मेरे प्रति तटस्थता का भाव ही रहा- किन्तु वानप्रस्थ आश्रम में दीक्षित होने के बाद उनकी भावधारा में अप्रत्याशित परिवर्तन हुआ और मेरे प्रति विशेष अनुराग की, स्नेह सम्मान की भावना का उनके मन में उदय हुआ।

यहाँ एक घटना उल्लेखनीय है। सन् २०१६ के ही आसपास आर्य समाज इन्दिरा नगर के वार्षिकोत्सव में जब उन्होंने मेरा कहीं नाम नहीं देखा, तो तत्कालीन अधिकारियों से इस सम्बन्ध में वार्ता की और मेरा कार्यक्रम उत्सव के अंतिम दिन रविवार को आग्रहपूर्वक रखवाया। लक्ष्मण जी की भावनाओं का सम्मान करते हुए मैं निर्धारित समय पर आर्य समाज के मंच पर पहुँचा भी किन्तु अत्यधिक व्यस्तता के कारण संयोजकगण मुझे समय नहीं दे पाये। रविवार को मध्याह्न में ही आमतौर पर उत्सव का समापन हो जाता है क्योंकि उसी दिन ऋषिलंगर भी रखा जाता है। सायंकाल ६ से ८ तक कार्यक्रम रहता तो अवश्य है किन्तु समापन के उपरान्त सायंकाल कोई उपस्थिति नहीं होती। संयोजकों की इस व्यवस्था से व्यथित लक्ष्मण जी ने सायंकालीन सत्र में मेरा व्याख्यान सुनिश्चित कराया, जिसको अधिकारियों ने स्वीकार किया। सायं ७ से ८ बजे के मध्य मेरा भाषण रखा गया- यह जानते हुए भी कि आर्य समाज में सायंकालीन सत्र में कोई उपस्थिति नहीं होती है। मैं निर्धारित समय पर पहुँचा- 'लाभा लाभौ, जया जयौ'- गीता के इस प्रेरक वाक्य को आत्मसात करते हुए मैंने ७ से ८ बजे तक अपना धारावाहिक भाषण दिया- जिसका वहाँ कोई सुनने वाला नहीं था। पूरा सभागार खाली था। श्रोता के रूप में मैंने देखा आचार्य ओजोमित्र शास्त्री मौजूद हैं। 'एकश्चन्द्र तमो हन्ति' शास्त्री जी ने मेरा पूरा भाषण सुना और सराहना की।

महत्वपूर्ण है वह बात जो मैंने उस दिन कही थी। मैंने अपने प्रति लक्ष्मण आर्य मुनि के स्नेह संबन्ध तथा कर्तव्यबोध की चर्चा तो की ही, एक अन्य लक्ष्मण के चरित्र पर भी रोशनी डाली। वह लक्ष्मण थे- डॉ.लक्ष्मण- जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती की अंतिम समय में अजमेर जाते समय मार्ग में चिकित्सा सेवा का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया था। पूरा विवरण देते हुए मैंने बताया कि चिकित्सार्थ आबू से लौटते समय मार्ग में डॉ.लक्ष्मण जी ने महर्षि को देखा तथा उनकी अस्वस्थता और चिकित्सा में अव्यवस्था को भी देखा तो वे उन्हीं के साथ रुक गये और अंतिम समय तक महर्षि की देखरेख की तथा चिकित्सा करते रहे। यद्यपि उन्हें इस सेवा कार्य के दण्ड स्वरूप अपनी राजकीय नौकरी से हाथ धोना पड़ा तथापि वे अपने कर्तव्य मार्ग पर डटे रहे। क्या उस डॉ.लक्ष्मण का त्याग कभी भुलाया जा सकता है? (देखिए- डॉ.भवानीलाल भारतीय कृत 'नवजागरण के पुरोधा स्वामी दयानन्द')। उस महान् सेवाव्रती ऋषिभक्त डॉ.लक्ष्मण के अतुलनीय त्याग की साक्षी ऋषि उद्यान अजमेर की धरती पर प्रिय श्री लक्ष्मण आर्य मुनि का निवास करना मेरे आत्मतोष का कारण है। *-डॉ.वेद प्रकाश आर्य*

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' का नवम्बर अंक मिला। प्रथम पृष्ठ पर योगी आदित्य नाथ का सम्बोधन 'आर्य समाज ने क्रान्ति-कारियों की मजबूत फौज खड़ी की' स्वाधीनता संग्राम इतिहास का सच्चा दर्पण है। 'काव्यायन' में इस बार अटलबिहारी वाजपेयी की कालजयी रचना 'चलते समय' माँ को सम्बोधित एक वीर बलिदानी-सन्देश देती हुई राष्ट्रीय रचना है। डॉ.कैलाश निगम की रचना 'अटल हिन्दू मन, हिन्दी तन' अटल जी की प्रसिद्ध कविता-'हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन। हिन्दू रग-रग, मेरा परिचय।।' की याद दिलाती है। ओम अभिनव की गीतिका शृंगार छन्द में निबद्ध है, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' कृत 'बाल दिवस' भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू पर आधारित देश भक्तिपूर्ण गीत है। आर्य महासम्मेलन पर आधारित सम्पादकीय मननीय व विचारणीय है। अन्य लेख व कविताएँ भी अच्छी हैं। इस ज्ञानवर्द्धक व उपयोगी अंक हेतु सम्पादक जी को बहुत बहुत बधाई।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

लम्बी प्रतीक्षा के बाद अगस्त-सितम्बर अंक प्राप्त हुआ किन्तु पढ़ने के बाद सारी अकुलाहट शान्त हो गई। डॉ.शिव प्रसाद सिंह ने 'अप्रियस्य तु पथ्यस्य' करने का साहस दिखाया है, वे बधाई के पात्र हैं। साम्यवादी व अंग्रेजों के मानस पुत्रों ने सदा ही भारतीय सभ्यता, संस्कृति व चिन्तनपक्ष के साथ खिलवाड़ किया है। आज आवश्यकता है कि इनको उसी भाषा में उत्तर दिया जाय। जिन्होंने उन्नीस सौ बयालीस के भारत छोड़ो आन्दोलन में अंग्रेजों का साथ दिया, सन् सैंतालीस में पाकिस्तान की हिमायत में खड़े रहे, सन् बासठ में चीन को सही ठहराया, आपात्-काल में इन्दिरा गांधी को सही बताया और भारत तेरे टुकड़े होंगे, के नारे लगाने वालों के पक्ष में जे. एन.यू. में देशद्रोहियों का उत्साहवर्द्धन किया उनसे भारत के हित की बात सुनने की आशा व्यर्थ ही है। सम्पादक जी ने तो *विदुषी सरस्वती की पुरानी बातों का स्मरण* कराया है। मैं तो अभी एक दशक पुरानी सच्ची घटना सुनाता हूँ। मेरे पड़ोस में एक संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् रहते थे। संस्कृत के विद्वानों में उनका बहुत सम्मान था। एक दिन मैंने उनकी पत्नी से पूछा-भाभी जी, आप पूजा में किस मंत्र का जाप करती हैं? उन्होंने कहा-लालाजी, मैं तो 'शिवाय नमः' का जाप कर लेती हूँ। मैंने कहा-पहले ओम् नहीं बोलतीं? तो उन्होंने कहा-तुम्हारे भैया ने कहा है कि औरतों को ओम् नहीं बोलना चाहिए। इन्हीं सज्जन ने मेरे लेख 'वाल्मीकि रामायण का उत्तर काण्ड' पढ़कर कहा था-शर्माजी, मैं आपके तर्कों से सहमत होते हुए भी यह नहीं कह सकता कि हमारे धर्मग्रन्थों में क्षेपक हैं। कहने का आशय यह कि आडम्बरों के हिमायतियों से लड़ाई अभी जारी रखनी है। 'श्रुति सौरभ' की सामग्री और शास्त्रार्थ महारथी पं.रामचन्द्र देहलवी के विचार तो हम जैसे पाठकों के लिए आशीर्वाद स्वरूप हैं। 'मनुष्य का विराट रूप' से दी गई सामग्री बहुत काम की होती है। सर्वोच्च न्यायालय के दो निर्णय-समलैंगिकता की वैधानिकता और स्वेच्छा से पर-पुरुष या पर-स्त्री गमन कानूनन मान्य-भारतीय संस्कृति और मान्यताओं पर गहरी चोट है। माननीय न्यायालय के आगे हम लाचार हैं क्योंकि हमारे ऊपर अवमानना की तलवार लटकी रहती है। सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश का विरोध करने वाले पहले अपनी गृहणियों को उन दिनों में रसोई से अवकाश देने का पुण्य कार्य करें। आज के वैज्ञानिक युग में नर-नारी का भेद वैचारिक शून्यता का ही परिचायक है।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

आर्य लोक वार्ता नवम्बर अंक में अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ने को मिली, एतदर्थ प्रस्तुत कर्ता आलोक वीर आर्य जी को अमित साधुवाद। महासम्मेलन में माननीय मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ का अविकल सम्बोधन गौरवपूर्ण तथा ऐतिहासिक महत्व का रहा। यह महासम्मेलन सम्पूर्ण विश्व की आर्योचित संचेतना का उद्दीपन करता है। आर्य समाज के उत्थान के लिए प्राण प्रण से समर्पित महाशय धर्मपाल सदृश आर्यवीर सदैव हृदय से नमनीय हैं। उनकी जितनी सराहना की जाय, वह कम है। आपके सम्पादकीय विवरण से इस सम्मेलन की गुरु-गम्भीरता, व्यापकता और लोकप्रियता का सहज आभास हुआ है, इसमें अनेक कर्मयोगियों की सत्यनिष्ठा तपस्विता प्रेरणीय रहेगी। 'व्यक्ति विशेष' स्तम्भ में पं.रामप्रसाद श्रीवास्तव का लोकोपकारी आजीवन समर्पण आर्य चिन्तन का मार्ग प्रशस्त करता है। 'मनुष्य का विराट रूप' शृंखला में प्रेरक प्रसंगों की प्रस्तुति प्रशंसनीय है। इसी प्रकार 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' में शास्त्रज्ञ पं.रामचन्द्र देहलवी द्वारा ईश्वरीय गूढ़ तत्वों को बड़े रोचक ढंग से समझाया गया है तथा विचार-बोध समाज की आंखें खोलने वाला है। 'कालजयी काव्य' में अमर अटल की 'चलते समय' शीर्षक रचना करुण रस से परिपूर्ण किन्तु देश भक्ति हेतु प्रेरणादायी है। अटल को समर्पित कौशल कुमार तथा डॉ.कैलाश निगम की कविताओं के साथ डॉ.अशोक, डॉ.शितिकण्ठ, ओम अभिनव, की काव्य प्रस्तुतियाँ भी हृदयग्राही लगीं। विश्व में आर्य-जागरण को फलीभूत करने हेतु वेदों की पुनर्प्रतिष्ठा सर्वथा समीचीन और वांछनीय है, हमें इसके लिए स्वच्छ मन से आर्य लोक को आलोकित करना होगा-

भारत विश्वगुरु होगा, यदि लौटें वेदों की ओर।
गुरुकुल पद्धति अपनाएं, नूतन शिक्षा पर दें जोर।
पाश्चात्य संस्कृति से दूषित होती है जीवन शैली-
धर्म-कर्म-चिन्तन से जोड़ें आर्य-संस्कृति की डोर।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय अर्य महासम्मेलन की रिपोर्ट के माध्यम से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उद्बोधन का सार-संक्षेप पढ़कर अत्यंत सुखद लगा। आर्य लोक वार्ता का नवम्बर अंक इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि हम जैसों के लिए कार्यक्रम में जाना सम्भव नहीं हो पाया तथापि मुख्य विचार पत्र के माध्यम से प्राप्त हुए हैं। आपके सम्पादकीय में भी महासम्मेलन

की अनुपम झांकी दर्शायी गयी है, उससे भी कार्यक्रम की विराटता का आभास मिलता है। श्री अमृत खरे ने यजुर्वेद के बहुश्रुत श्लोक का काव्यानुवाद बहुत सुन्दर शब्दों में किया है- इस 'विनय पीयूष' के पवित्र भाव को प्रणाम। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता', 'वेदांजलि', 'मनुष्य का विराट रूप' तथा 'ईश्वरपूजा का वैदिक स्वरूप' आद विषय सामग्री बार बार पठनीय और विचारणीय रहती है। 'शुभाकांक्षा' में विद्वानों के विचार बड़े प्रेरक और हृदयस्पर्शी होते हैं। सभी को हार्दिक बधाई। 'काव्यायन' पृष्ठ तो अद्वितीय ही है, ऐसा किसी पत्र में कोई पृष्ठ नहीं मिलता। डॉ.कैलाश निगम, विनम्र, डा. अशोक, डा.शितिकण्ठ, ओम मिश्र आदि सभी की कविताएं एक से बढ़कर एक हैं। पत्र की सारी टीम को हृदय से शुभकामनाएँ।

-सविता वाणी
चौक बाजार, गौरी गंज, अमेठी (उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता' का अध्ययन करने पर मुझे गोस्वामी तुलसीदास की उक्ति स्मरण हो आती है-'रवि मण्डल देखत लघु लागा, उदय तासु त्रिभुवन तम भागा।' 'आर्य लोक वार्ता' का आकर प्रकार तो सामान्य ही है, मगर उसके विचार और कार्य लोकोत्तर हैं। यह बात मैं विशेष रूप से लक्ष्य करके लिख रहा हूँ श्री योगी आदित्यनाथ का अक्षरशः भाषण 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित हुआ है। 'आर्य लोक वार्ता' एकमात्र ऐसा आर्यजगत का पत्र है, जिसने योगी आदित्यनाथ का भाषण ज्यों का त्यों प्रकाशित करने हेतु श्रम किया है। योगी जी का यह भाषण ऐतिहासिक है और आर्य समाज को विश्व पटल पर स्थापित करता है। योगी जी का यह कथन समाज को नवीन दिशा प्रदान करता है-'भारत और भारत में रहने के लिए हमें अपने राष्ट्रधर्म को पहचानना पड़ेगा। हमारा राष्ट्रधर्म सबसे बड़ा धर्म होना चाहिए।' योगी जी ने यह भी कहा है कि अत्याचार अनाचार को देखते हुए दर्शक मात्र बने रहना या तटस्थ रहना कायरता है। महाभारत का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए योगी जी ने आह्वान किया कि अन्याय के विरुद्ध प्रतिकार करना सर्वथा उचित है। योगी जी ने यह भी कहा कि भूमाफियाओं से धार्मिक संस्थाओं की सम्पत्ति की रक्षा करना हमारा दायित्व है। पहली बार एक मुख्यमंत्री कहता है कि यदि कहीं किसी भूमाफिया ने आर्य समाज की सम्पत्ति पर कब्जा किया हो, तो अविलम्ब हमें सूचना दें, हम उनके चंगुल से आर्य समाज की सम्पत्ति मुक्त करायेंगे। सचमुच योगी आदित्यनाथ का एक एक शब्द प्रेरणा देता है और एक स्वस्थ सुन्दर समाज की रचना हेतु हमें जागृत करता है। इसी प्रकार श्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री ने यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्ध करने की प्रेरणा दी है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली के सफल आयोजन के बारे में सम्पादक महोदय के विचार सारगर्भित और यथार्थ हैं। वास्तव में इस महासम्मेलन द्वारा आयोजकों ने इतनी बड़ी लकीर समय की शिला पर खींच दी है जिसके समक्ष अन्य पूर्व में खींची गई लकीरें छोटी पड़ गई हैं।

आपको यह पत्र लिखने का एक अन्य कारण भी है, जो बहुत महत्वपूर्ण है। आपने माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की भावपूर्ण कविता प्रकाशित की है, पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। बहुत भावपूर्ण और विचारोत्तेजक, हृदय को छू लेने वाली कविता है; जिसमें उन्होंने मातृभूमि के प्रति बलिदान होने के लिए प्रस्तुत एक युवक की मनोदशा का वर्णन किया है। आशा है, 'आर्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक दिन प्रति दिन प्रगति के सोपानों पर आगे बढ़ता जायगा।

-गुरुप्रसाद मिश्र 'गाँधी'
विजयलक्ष्मी नगर, सीतापुर, उ.प्र.

***

'आर्य लोक वार्ता' का नवम्बर, २०१८ अंक मिला। इसके मुखपृष्ठीय आलेख 'आर्य समाज ने देश में क्रांतिकारियों की फौज खड़ी की' के माध्यम से 'राष्ट्रीय स्वतंत्र्य आन्दोलन' में आर्य समाज के बहुमूल्य प्रदेय, विशेषतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के अभूतपूर्व योगदान के साथ ही समाज के अनेक सरोकारों यथा शिक्षा के प्रसार, अंधरूढ़ियों से मुक्ति आदि क्षेत्रों में क्रांतिकारी चेतना की लहर दौड़ाई। 'विनय पीयूष' में ईशावास्योपनिषद के प्रथम मंत्र 'ईशावास्यमिदं...' का काव्य रूपान्तर अतीव महत्त्वपूर्ण है जो त्याग युक्त भोग का संदेश देता है। आज हम 'त्याग' को त्यागकर केवल भोग में ही ऊब-डूब रहे हैं, तभी मनःशान्ति नहीं। अतएव त्यागपूर्वक भोग ही वरणीय है, श्रेयस्कर है। सम्पादकीय में डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन-२०१८ की प्रशस्त उत्साहवर्द्धक प्रस्तुति की है। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' के अन्तर्गत 'मुक्ति और बंध' का दार्शनिक विवेचन है। पं.शिवकुमार शास्त्री द्वारा 'वेदांजलि' में ईश्वरीय ज्ञान वेद और उसके स्वरूप की प्रामाणिक मीमांसा प्रशंसनीय है। 'दयानन्द-चरितम्' में अंग्रेजों की क्रूरता का रेखांकन है और हमें संगठित होने की अपेक्षा-अनिवार्यता पर बल दिया गया है। 'शुभाकांक्षा' स्तम्भ के अन्तर्गत विभिन्न विचारकों, विद्वानों की प्रेरक प्रतिक्रियायें हैं। 'धधकते पृष्ठ' काव्य-कृति पर रचनाकार डॉ.वेद प्रकाश आर्य की प्रतिक्रिया आह्लादकारी है। श्री आनन्द कुमार जी का धारावाहिक 'मनुष्य का विराट् रूप' बहुत प्रेरणाप्रद आलेख है। शास्त्रार्थ महारथी पं.रामचन्द्र देहलवी का 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' व्याख्यान पुनः पुनः पठनीय और मननीय है। इससे हमें ईश्वर विषयक जिज्ञासा के क्षेत्र में नयी चिन्तन की ऊर्जा प्राप्त होती है। 'काव्यायन' तो सारस्वत रुचिरता का मनोहारी है ही जिसमें डॉ.कैलाश निगम, डॉ.शितिकण्ठ, डॉ.अशोक कुमार गुप्त 'अशोक', श्री आजाद कानपुरी, श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', श्री ओम अभिनव मिश्र, श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', श्री कौशल कुमार जी की रचनाएँ विविध सरोकारों से सम्बद्ध रुचिकर-प्रीतिकर हैं। 'कालजयी काव्य' के रूप में पूर्व प्रधानमंत्री और साहित्यकार स्व.अटल बिहारी वाजपेयी जी की अत्यंत प्राणवन्त, ममस्पर्शी राष्ट्र- प्रेमपरक कविता 'चलते समय' का तो कहना ही क्या! मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने की भावना से अनुप्राणित यह रचना निःसन्देह स्नेहाप्लावित करुणा, ममता एवं राष्ट्रवादिता के तेज से भास्वर है।

इसके अतिरिक्त प्रदेश में होने वाले आर्य समाज के विविध आयोजनों, राष्ट्रीयतावादी तथा साहित्य के कतिपय विशिष्ट आयोजनों, संगोष्ठियों, उत्सवों आदि की सूचनाएँ हैं। समग्रतः अपनी सीमा में आपका यह पत्र निस्सीम ही प्रमाणित होता है। ऐसे उच्चस्तरीय साहित्यिक प्रतिमान प्रस्तुत करने वाले सत्कार्य हेतु आपको अनेकशः बधाइयाँ!

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
78, त्रिवेणी नगर, डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ

***

सुबह आये बिन्दु कपूर बन कर उड़ गये, अब जहाज का पंछी फिर जहाज पर आये, इन्तजार है। विचार में आये बिन्दु ही शायद सपने में आते हैं, रात के किसी ऐसे ही सपने को हम लिखते हैं- तमाम घंटों के बाद कमरा अपना खोल अन्दर को हुए तो देखा धुआँ से कमरा भरा है। आग कंट्रोल में है, वजह किसी पीतल के छोटे ड्रम में है। बाहर निकलते वक्त इन्वर्टर को तो कट कर दिया पर नहीं लाइन में जो उसे कौन याद रखे। सो बेलाइन होकर भी वह ऑन ही रहा। आगे ऐ हर्ष! रहते तक ध्यान रखो, कतई ऑन न रहे हीटर सुनिश्चित करके रखो, वापस को नहीं रहे तुम कौन जानेगा? सो कोई भी घटना हो सकती है, सो हमेशा, सेफ साइड को हो के रहा। सो देर से बुझाई आग, हमने सपने में।

-बाँके बिहारी 'हर्ष'
सविल लाइन्स, फैजाबाद-224001

***

अद्भुत, अनुपम, अप्रतिम अनुवाद

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रथम बार वेदमंत्रों की अलंकार योजना को लेकर उसमें अन्तर्निहित भावात्मक एवं रसात्मक सौष्ठव की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित किया किन्तु अभी तक वेद मंत्र का काव्यात्मक सौंदर्य मंत्रों में ही अन्तर्निहित था और लोग आमतौर से वेदमंत्रों का सतही अर्थ लगा लेते थे। पहली बार हिन्दी कविता और आध्यात्मिक संसार के सामने एक कवि ने वेदमंत्रों के काव्यात्मक वैभव से परिचय कराया है- वह कवि हैं श्री अमृत खरे। इसी अंक के प्रथम पृष्ठ पर कवि द्वारा वेदमंत्र का जो अनुवाद गीतों में ढाला है; वह वेद के अन्तरंग की झाँकी प्रस्तुत करता है। यह गीतात्मक काव्यानुवाद अद्भुत है, अनुपम है, अद्वितीय है- कवि बधाई का पात्र है; जिसने वेद में छिपे हुए रसामृत को पहली बार विश्व के समक्ष उजागर किया है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर की भाव साधना, श्रीमती महादेवी वर्मा की गीत योजना और हरिवंश राय बच्चन की भाषिक संरचना की त्रिवेणी अमृत गीतों में प्रवहमान है। यह मैं दावे के साथ कह सकता हूँ। विशेषता यह है कि अनुवाद वेदों के अनेक भाष्यों के अनुशीलन करने के बाद कवि ने लिखा है और महर्षि दयानन्द का वेदभाष्य प्रमुख आधार बनाया गया है कि अन्य भाष्यकर्ता मंत्र के मर्म तक पहुँचने में विफल रहे हैं।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता, लखनऊ

धारावाहिक-(88)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

साधारणतया लोग निकट की वस्तुओं का निरादर और दूर की वस्तुओं का आदर करते हैं। उपर्युक्त उदाहरणों से हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि निकट की वस्तुएँ उपेक्षणीय नहीं हैं। बहुत-सी ऐसी वस्तुएँ, जिनकी प्राप्ति के लिये लोग चिन्तित रहते हैं, उनके आसपास ही मिलती है। अनेक अभीष्ट और उपयोगी साधन, अमूल्य सुअवसर, सौभाग्य मनुष्य के हाथ में ही रहते हैं, किन्तु वह उनकी ओर ध्यान नहीं देता। जब वे हाथ से निकल जाते हैं, तब उसे उनका महत्व ज्ञात होता है।

आप जब कभी अपनी चिन्तामणि को खोजने निकलें, देख लीजिये कि कहीं वह आपके आस ही पास न हो। सहज सुलभ होने के कारण ही किसी वस्तु को साधारण एवं अनुपयोगी मत मानिये। उसके गुण को देखिये और उसका लाभ लीजिये। घास की साधारण वस्तु भी आपके बड़े काम की हो सकती है।

२-सफलता का महत्व

एक प्राचीन कथा है। स्वर्ग की तीन प्रमुख देवियाँ-लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती-एक बार एकान्तवास के लिए भारतवर्ष में पधारीं। तीनों एक रमणीक उद्यान में पहुँचीं। उसमें फल-फूलों के अनेक वृक्ष थे। उन्होंने निश्चय किया कि अपनी-अपनी रुचि का एक-एक वृक्ष चुनकर उसको सींचना चाहिये और उसी के नीचे अपना प्रवासकाल सुख से व्यतीत करना चाहिये।

लक्ष्मी ने कहा-मैं तो रमा हूँ, सौन्दर्य की देवी हूँ; इसलिये कचनार के वृक्ष का चुनती हूँ। जिस समय वह फूलेगा, उसकी शोभा देखकर मैं मुग्ध हो जाऊँगी।

पार्वती ने कहा-मैं भवानी हूँ; रण की देवी हूँ; इसलिये पलाश को अपनाती हूँ। जिस समय टेसू का पेड़ लाल-लाल फूलों से लद जायगा, उस समय वह रक्तरंजित रणस्थल जैसा सुन्दर लगेगा। मुझे वह दृश्य कितना प्रिय लगेगा!

सरस्वती ने कहा-मुझे तो फूल की अपेक्षा फल अधिक प्रिय है, इसलिये मैं आम के वृक्ष के नीचे डेरा डालूँगी।

तीनों अपने-अपने वृक्षों की सेवा करने लगीं। थोड़े ही दिनों में उपवन में ऋतुराज का आगमन हुआ। कुसुमाकर एक-एक तरु को सजाने लगा। देखते-देखते वाटिका रंग-बिरंगे फूलों से भर गई और प्रकृति की चित्रशाला जैसी प्रतीत होने लगी।

कचनार के वृक्ष पर चढ़कर लक्ष्मी ने कहा-सखियों, मेरा वैभव देखो, मेरे कामना तरु को देखो; इस उद्यान का एक भी पुष्पित वृक्ष आज इस कचनार की समता नहीं कर सकता; यह तो अंग-अंग से फूल गया है; इसकी डालियाँ मेरी ही साड़ियाँ पहने खड़ी हैं। इसके साथ मेरी शोभा कितनी बढ़ गई है। मैं तो इसी में खो गई हूँ।

दूसरी ओर से पार्वती बोलीं-रमा! सरस्वती! इधर तो देखो; कुसुमित पलाश में युद्ध का दृश्य देखो। यह वृक्ष शूरवीरों के रुधिर से रँगे हुए युद्धक्षेत्र जैसा लगता है। मेरा मन तो इसी में रम गया है। मैं हर्षोन्मत्त होकर नाचना चाहती हूँ। इन लाल-लाल फूलों से मेरी लालसा व्यक्त हो रही है।

सरस्वती चुप रहीं। उनकी आम्र मंजरियाँ कचनार और टेसू के फूलों जैसी आकर्षक नहीं थीं, फिर भी उसमें सुगन्धि थी। पवन उसे चारों ओर बिखेर रहा था। अमराई में कोकिल कूजती थी, भौंरे गुंजार करते थे। उनके द्वारा सरस्वती का हर्ष यों ही व्यक्त हो रहा था। वे मन ही मन इस बात से प्रसन्न थीं कि उनकी वस्तु का सत्कार हो रहा है और अन्य जीवन भी उसका उपभोग कर रहे हैं।

धीरे-धीरे पलाश और कचनार के फूल झड़ने लगे। उधर आम के बौरों में फल लगने लगे। कुछ ही दिनों में लक्ष्मी और पार्वती का तरुवैभव नष्ट हो गया। सरस्वती के आम पकने लगे और वे आनन्दपूर्वक उनको खाने लगीं। दोनों देवियाँ हाथ मलतीं उनके पास पहुँचीं और बोलीं-बहन, हमारी अपेक्षा तो तुम्हीं सुखी हो; हमारा ठाठ-बाट निष्फल हो गया; तुम अपने परिश्रम का मीठा फल पाकर धन्य हो; तुम्हारी दूरदर्शिता प्रशंसनीय है; हम तुम्हें तुम्हारी सफलता पर बधाई देती हैं।

सरस्वती ने दोंनों का स्वागत करके कहा-आओ सहेलियों, तुम भी मेरी सफलता का सुख भोगो; आज ही मेरा इतने दिनों का श्रम सफल हुआ है।

लक्ष्मी और पार्वती ने मान लिया कि सच्चा सुख और गौरव सफलता में है। हमें भी इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिये। ऊपरी ठाठ-बाट और क्षणिक आमोद-प्रमोद से बड़ा धोखा होता है। मनुष्य को ऐसा ही कार्य करना चाहिये जिसके अन्त में उत्तम फल-प्राप्ति की संभावना हो, जिसमें श्रम सफल हो, समय सफल हो और जीवन सफल हो।

३-अनादर क्यों होता है?

महाभारत में एक सुन्दर उपाख्यान है। एक बार भगवती लक्ष्मी सुन्दर वेष धारण करके किसी गोशाले में गईं। गायों ने उन्हें देखकर उनका परिचय पूछा। लक्ष्मी ने कहा-मैं धन-ऐश्वर्य-श्री-सौभाग्य की देवी हूँ। संसार में सभी मुझे चाहते हैं। ऋषि-मुनि तक मेरी उपासना करते हैं; जिस पर मैं प्रसन्न हो जाती हूँ, उसके लिये मर्त्यलोक भी स्वर्गतुल्य हो जाता है। मैं तुमलोगों पर प्रसन्न होकर तुम्हारे शरीर में स्वयं निवास करने आई हूँ।

लक्ष्मी को विश्वास था कि गायें उनका परिचय पाकर समुचित स्वागत-सत्कार करेंगी, लेकिन हुआ कुछ और ही। गायों ने तिरस्कारपूर्वक कहा-लक्ष्मी, तुम तो स्वभाव की चंचला प्रसिद्ध हो; हम तुम्हें अपने पास नहीं रखना चाहतीं; तुम्हारा क्या विश्वास! तुम हमारे स्वभाव को भी चंचल बना कर, हमें किसी दिन छोड़कर चली जाओगी।

लक्ष्मी अपने मान-मर्दन से खिन्न होकर बोलीं-गायों, तुम इसलिये मेरी अवज्ञा मत करो कि मैं बिना बुलाये स्वयं प्रार्थी बनकर तुम्हारे पास आई हूँ अतएव निकृष्ट हो गई हूँ। मैं हृदय से तुम्हारा उपकार करना चाहती हूँ; मेरी सहज कृपा का लाभ लो। मेरी मनोकामना को पूर्ण करो।

गायों ने एक स्वर से उत्तर दिया-नहीं भगवती, क्षमा करो; हमें अयाचित वरदान नहीं चाहिये। आप भोगियों के यहाँ जाकर निवास करें; हमारे जैसे सीधे-सादे जीवों को माया-मोह में न फंसाइये। यहाँ आपके उपयुक्त कोई स्थान नहीं है।

लक्ष्मी ने पुनः प्रार्थना की। तब गायों ने बड़ी उपेक्षा के साथ कहा-अच्छी बात है; यदि आप सचमुच हमारे शरीर में निवास करने का निश्चय करके आई हैं तो हमारे गोबर और मूत्र में निवास कीजिये। हम और कहीं आपको ठहरने का स्थान नहीं दे सकतीं।

लक्ष्मी जी गोबर और गोमूत्र में निवास करने लगीं।

इस कथा से एक तो गोबर और गोमूत्र की उपयोगिता पर प्रकाश पड़ता है। दूसरे, इससे यह शिक्षा भी मिलती है कि कोई चाहे कितना भी बड़ा आदमी क्यों न हो यदि बिना निमंत्रण के कहीं जाता है तो उसका लोग यथोचित सम्मान नहीं करते। 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की नीति का अनुकरण करने वालों को मेहमान का मान नहीं मिलता। लोक की यही रीति है कि 'घर आयो नाग न पूजहीं, बाँबी पूजन जाहिं'।

('मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-4

ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

मैं जब लाला जी के मकान के आगे से गुजरा तो वे बैठे हुए थें मैंने उनको याद दिलवाया कि आप अपने कपड़े जब बनवाते हैं तो ठाकुर जी का ख्याल रखा कीजिए। कहने लगे-'आपको पुजारी जी ने कहा होगा।' मैंने कहा-'हाँ, पुजारी ही कह सकते हैं। ठाकुर जी की क्या हिम्मत जो वह कह सकें। वे तो आपकी प्रजा में सम्मिलित हैं। स्वामी के सामने सेवक कहीं बोल सकता है?' कहने लगे-'अच्छा, हो जाएगा इन्तजाम।' मैंने कहा, 'जन्माष्टमी से पहले ही हो जाना चाहिए।' ये घटनाएं मैं आपको क्यों बता रहा हूँ? केवल इसलिए कि आपको यह पता चल जाये कि गलत विश्वासों और गलत तरीकों से कितनी हानि हो रही है। जो हमारा रक्षक था, अब हम उसके रक्षक हैं; वह हमारा बन्दी है। जो हमारा पोषक था अब खाने के लिए हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, वह हमारा मोहताज हो गया है।

एक भजनीक महाशय थे। अपने भजनों के बीच कह रहे थे कि मुसलमानों का खुदा खुदावन्द ताआला और हिन्दुओं का जो मन्दिर में रखा हुआ है तालाबन्द खुदा है। मैंने यह बात सुनी थी, मुझे अच्छी लगी इसलिए आपको भी सुना दी। उनकी यह बात सही थी। मन्दिर को अपने ईश्वर की रक्षा के लिए, उसमें ताला लगाना पड़ता है।

दिल्ली में एक बार जाटों के मुहल्ले से गाय निकालने के प्रयत्न में झगड़ा हो गया। कसाई लोग जाटों के मुहल्ले से गाय निकालकर ले जाना चाहते थे। लोटन सिंह वगैरा जाट लोग लाठियाँ लेकर खड़े हो गए और कह दिया कि हम अपने मुहल्ले से गाय को नहीं निकलने देंगे। झगड़े की सम्भावना देखकर डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें अपने जुलूस का रास्ता बदलने के लिए कहा। इस पर वे लोग रुष्ट हो गए और उन्होंने मुहल्ले में घुसकर लूट-मार करनी शुरू की। वे एक मन्दिर में घुस गये और जितने भी देवता वहां रखे थे सब तोड़ डाले। मन्दिर में पुजारी भी था। वह डर के मारे, कोने में लिपटी हुई चटाई थी, उसमें घुस गया। किसी को कुछ भी पता न चला। जब वे लोग सभी मूर्तियाँ तोड़कर चले गए तो पुजारी जी बाहर निकल आए। बाद में जब मैं उनसे मिला तो मैंने पूछा-'कि भगीरथ जी! तुम कहाँ थे जब मन्दिर में वे लोग मूर्तियाँ तोड़ रहे थे? कहने लगे कि मैं मन्दिर में ही था। कोने में चटाई रखी, लिपटी हुई। उसमें घुस गया था, इसलिए बच गया। नहीं तो वे मुझे मार डालते। वे तो मारने पर तुले हुए थे। क्रोध में थे। मैंने उनसे पूछा- कि तुम्हें उस समय सबसे ज्यादा चिन्ता किसकी थी? 'मुझे अपने बेटे की थी कि न जाने कहाँ है?' (उसका बेटा आजकल अलवर में मजिस्ट्रेट है) मैंने पूछा कि तुम्हें देवताओं के टूट-फूट जाने का कोई गम नहीं है? कहने लगे कि अजी, वह तो जयपुर से फिर यहां आ जायेंगे, कोई दो रुपये को, कोई चार रुपये का, कोई आठ का, लेकिन मेरा बेटा कहाँ से आ जाता? अब जरा सोचने की बात है, सच प्रकट हो गया कि नहीं? भगवान घड़े-घड़ाए पड़े हैं, दो रुपये और चार रुपये में बिक रहे हैं। हमने इस प्रकार भगवान् किया तो आज हमारा भी अपमान हो रहा है। यह भगवान् की पूजा का तरीका नहीं है। हमने गलत तरीके प्रयुक्त किए हैं। मैं आगे चलकर आपको ईश्वर-पूजा का सही प्रकार बताऊँगा।

मैं मेरठ में व्याख्यान दे रहा था तो एक नवयुवक खड़े हो गए और कहने लगे कि मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मैंने कहा-'नियमानुसार व्याख्यान के बाद प्रश्न पूछे जाते हैं, तभी आप पूछ लीजिये।' वे कहने लगे-'जी तो प्रश्न पूछने का अभी कर रहा है।' मैंने कहा-'अच्छा पूछिए।' पूछने लगे-'आप ईश्वर को हर जगह मानते हैं या नहीं?' मैंने कहा-'हाँ, मानते हैं।'

प्रश्न-तो मूर्ति के अन्दर भी हुआ कि नहीं? उत्तर-हाँ, मूर्ति के अन्दर भी है और बाहर भी। प्रश्न-तो आप मूर्ति का खण्डन क्यों करते हैं? उत्तर-हम मूर्ति का खण्डन नहीं करते। हम तो गलत मूर्ति-पूजा का खण्डन करते हैं। प्रश्न-जब भगवान् मूर्ति के अन्दर है तो आप मूर्ति-पूजा का खण्डन क्यों करते हैं? उत्तर-आपके मूर्ति पूजने का उद्देश्य भगवान् की पूजा करना है। जब भगवान् सर्वत्र है तो मूर्ति के अन्दर वाले ही भगवान् को आप क्यों पूजते हैं? मूर्ति से बाहर वाले को क्यों नहीं पूजते? भगवान् तो सर्वत्र है। मूर्ति के अन्दर भी और बाहर भी।

मान लीजिए आप मुझ से मिलने आये और मैं आपको अपने द्वार के बाहर ही मिल जाऊँ तो आपको मुझसे मिलने में अधिक सुविधा होगी या मेरे अन्दर होने पर होगी?

क्योंकि भगवान् तो सब जगह है, उससे बाहर ही मिल लीजिए। व्यर्थ में अन्दर वाले के पीछे क्यों पड़े हैं? आप मूर्ति में दाखिल नहीं हो सकते और मूर्ति का खुदा बाहर नहीं आ सकता। क्यों मुश्किल में पड़ते हैं? सरल काम कीजिए और मूर्ति से बाहर वाले की ही पूजा कर लीजिए।

दूसरी बात यह है कि मूर्ति-पूजा करने से तो मूर्ति की पूजा होती है। भगवान् की पूजा नहीं होती। वह तो सर्वत्र है। इसलिए उसे बाहर आने-जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं इसके विरुद्ध नहीं हूँ कि आप ईश्वर की पूजा करें किन्तु आप ईश्वर की पूजा करते कहाँ हैं? आप तो मूर्ति को पूजते हैं, उस पर फूल चढ़ाते हैं, पानी डालते हैं। क्या पानी और फूल में भगवान् नहीं है? प्रश्नकर्ता ने उत्तर दिया-'हाँ है।' और उसको बनाया किसने है? कि 'भगवान्' ने तो मैंने कहा-कि 'फूल का मूल्य दुगना हो गया। फूल को बनाया भी भगवान् ने है और उसके अन्दर वह व्यापक भी है किन्तु मूर्ति में व्यापक तो है परन्तु भगवान् ने उसे बनाया नहीं है तो मूर्ति से अधिक महत्वपूर्ण फूल है। आप आठ आने पर

रुपये चढ़ा रहे हैं। आपको अपनी मूर्तियां (जो आठ आने के समान मूल्य वाली हैं) उन्हें फूलों पर (एक रुपये के समान मूल्य वाले हैं) चढ़ाना चाहिए। आप तो कम कीमत चीजों पर महंगी चीजें चढ़ा रहे हैं। कहने लगे-'इससे तो सब उल्टा हो जाएगा।' मैंने कहा कि उल्टा नहीं सुल्टा हो जाएगा। उल्टा तो अब है। क्या यह भगवान् की पूजा हो रही है? मैं कहता हूँ यह पूजा नहीं हो रही बल्कि भगवान् का मजाक बनाया जा रहा है।

मैं मानता हूँ कि कृष्णचन्द्र जी ऊँचे दर्जे के आदमी थे। उन्हें अवतार कह लीजिए, मुझे इसमें भी एतराज नहीं है। रामचन्द्र जी के बारे में भी यही बात है। उन्हें भी आप अवतार कहिए। यदि वे ऊँचे और श्रेष्ठ पुरुष थे तो आप उनके गुणों से लाभ उठाइए। लिखा है एक अंग्रेज कवि ने-

Lives of great men all remind us,
That we can make our lives sublime.
And departing leaves behind us,
The footprints on the sand of time.

बड़े-बड़े लोगों का जीवन हमें याद दिलाता है कि हम भी अपने जीवन को उच्च बना सकते हैं और दुनिया से रुख्सत होते उक्त जमाने की धूलि पर अपने पैरों के निशान छोड़ जायें ताकि लोग उस रास्ते पर चल सकें।

तो यदि आप कृष्णचन्द्र जी की मूर्ति रखते हैं तो दो बनवाइये। एक मुझे दीजिए और एक आप रखिए। देखिए मैं उस मूर्ति को झाड़-पोंछकर साफ रखूंगा और उनके जीवन से कुछ सीखूंगा जिनकी वह मूर्ति है।

रामचन्द्र जी हैं। उनकी मूर्ति घर में रखने का क्या लाभ! रामचन्द्र जी के चरित्र से वह मोटी पुस्तक रामायण भरी पड़ी हुई है। रामचन्द्र जी ने अपने पिता की आज्ञा मानी। आज्ञा मानकर वन चले गए। तो मैं अपने बच्चों को सिखाऊंगा कि वे अपने माँ-बाप की आज्ञा मानें। मेरे पिताजी तो मर गये। इसलिए मैं अपने बच्चों को ही सिखाऊंगा उन्हें यह बताऊंगा कि रामचन्द्र जी के पीछे चलने का क्या अर्थ है। पीछे चलने का यही अर्थ है कि उनके गुणों को धारण करो।

कृष्णचन्द्र के लिए भी यही बात है। कितने बड़े विद्वान् थे? कैसे बड़े नीतिवान् और बलवान् थे? तीनों गुण उनमें थे। हमको भी अपने अन्दर ये चीजें धारण करनी चाहिएं। उन्होंने छोटे-छोटे माण्डलिक राजाओं को मिलाकर एक महाभारत बना दिया था। आज भारत के टुकड़े होते चले जा रहे हैं। आप न होने दीजिए इन टुकड़ों को। उनके चरित्रों को सीखिए। पीछे चलने का यह अर्थ नहीं है कि आप नाचने लगें। किसी को राधा बना लें और आप उसके साथ नाचें। यह कृष्ण का चरित्र नहीं था। यही बात कही जाती है तो लोग नाराज हो जाते हैं।

(क्रमशः)

काव्यायन

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस (23 दिसम्बर)

स्वामी श्रद्धानन्द

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दयानन्द ऋषि-शिष्य, नमन हे स्वामी श्रद्धानन्द।
मुंशीराम नाम त्यागा, भाया जीवन मकरन्द।।
आत्मज्ञान से जागा था
परमेश्वर पर विश्वास,
दयानन्द की मूर्ति बसी उर
फेंका मद्य-गिलास।
निकल कुचक्र से चले, सुपथ पर, पाया परमानन्द।
त्यागी थे, धुन के पक्के,
कथनी-करनी एक।
कहा महात्मा गाँधी ने,
वे बने महात्मा नेक।
'कल्याणमार्ग के पथिक' रूप में लिखे जीवनी-छन्द।
स्वतंत्रता के लिए किया
सत्याग्रह आन्दोलन।
जामा मस्जिद में वेदों का
किया प्रखर उद्वेलन।
हिन्दी-सेवी, आर्य समाजी ने काटे भ्रम-फन्द।
ऋषि का ऋण चुकाने को
मांगी थी धन की भिक्षा।
की कांगड़ी में स्थापित-
पद्धति गुरुकुल शिक्षा।।
श्रद्धानन्द दीप-उर जागे, ज्योति 'विनम्र' अमन्द।
नमन हे स्वामी श्रद्धानन्द।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

महामना जयन्ती (25 दिसम्बर)

महामना पं.मदनमोहन मालवीय

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

विक्रम उन्नीस सौ तथा, थे अठारह वर्ष।
तब 'ब्रजनाथ' निवास में, हुआ जन्म सुत-हर्ष।।
नाम 'मदन मोहन' सुभग, मालवीय था वंश।
शांति अहिंसक बन कहा, नर मत बने नृशंस।।
पाई शिक्षा उच्च अति, पर था सादा वेश।
भाव समाहित था हृदय, हो स्वतंत्र निज देश।।
हिन्दी, हिन्दू, हिन्द हित, भर कर उर में प्रीति।
शिक्षित हों युव जन सभी, रहे सोचते रीति।।
'महामना' के नाम से, हुए विश्व-विख्यात।
थी इच्छा समभाव ला, वैर मिटाऊँ स्यात।।
सहीं यातनाएँ अमित, झेला कारागार।
त्याग वकालत आपने, किया देश से प्यार।।
हिन्दू विद्यालय बना, काशी में अति भव्य।
जिसकी शिक्षा साथ ही, छवि लगती है भव्य।।
हिन्दी के उत्थान हित, किये अनेक प्रयास।
दो हजार दो में किया, जा सुरलोक निवास।।

–370/27, हाता नूरबेग, संगमलाल वीथिका, सआदत गंज, लखनऊ

ऋतु वर्णन

शीत ऋतु

❑रामा आर्य 'रमा'

दिन छोटे होने लगे, बड़ी हो रही रात।
सूरज के तेवर घटे, घटी 'रमा' औकात।।

प्रबल शीत का काल है, घर-घर अग्नि प्रदीप्त।
रातें हैं भारी हुई, दिवस हुए संक्षिप्त।।

नहीं ऊन लगती गरम, लगती नहीं कपास।
चादर ही लगती भली, कोई हो जब पास।।

सर्दी में लगता 'रमा', भोजन भी स्वादिष्ट।
तरह तरह की सब्जियाँ, दूध मलाई इष्ट।।

बूँदों से पाला गिरे, झर-झर झरे तुषार।
जकड़ी शीत प्रकोप है, अपनी भुजा पसार।।

सर्दी में यात्रा 'रमा', एक भयानक काल।
दुर्घटनाएँ होतीं अधिक, नियति बिछाये जाल।।

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

वक्त आ गया है

❑डॉ. कैलाश निगम

सुलग जले न कहीं
आँचल वसुन्धरा का
द्वार-द्वार डोल रही
चेतना हमारी है।
नदियाँ विषाक्त न हो पायें,
ले पियूष कुम्भ
धार-धार डोल रही
चेतना हमारी है।
मानस में ग्रन्थियाँ पड़ीं जो
स्वार्थ की हैं उन्हें
बार-बार खोल रही
चेतना हमारी है।
नया इतिहास रचने का
वक्त आ गया है
बार-बार बोल रही
चेतना हमारी है।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

धर्मरथी

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

अबलाएँ हुई सबलाएँ परन्तु,
बलाएँ नयी मुँह खोल रही हैं।
फिर दुख-दुर्दिन-दीनता में
कुछ देह का मोल भी तोल रही हैं।
चढ़ती कुछ दैत्य-दहेज की भेंट,
कहीं तज-लाज को डोल रही हैं।
अपसंस्कृति की बही ऐसी हवा
कहीं शीश-चढ़ी वे किलोल रही हैं।

सीता अकेली की बात नहीं,
नित ही कितनी ही हरी जा रहीं।
मानी-मदोद्धत पाश्वीवृत्ति का,
लक्ष्य बनीं मसली-मरी जा रहीं।
उद्धार-अहल्या का प्रश्न न एक,
अनेक महेन्द्रों से हैं धरी जा रहीं।
उदात्त कहाँ शबरी से सु-भाव,
कु-भाव की नाव चढ़ी तरी जा रहीं।

–538क/88, त्रिवेणी नगर–1, लखनऊ–20

हर्ष-चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

नमक बिना व्यंजन बेकार,
अति हो कहीं करें इनकार।
वेद ज्ञान सम्मत विज्ञान,
सत्य निखिल शाश्वत प्रमाण।।
आर्ष ग्रन्थ हो या बकवास,
सब में सरस्वती - आवास।
वाणी जब है निराकार,
तो ईश्वर कैसे साकार??
एक 'हर्ष' हो सत्य प्रतीति,
कर्म योग्य फल शाश्वत नीति।
नियम न कोई सभी स्वतंत्र,
यही मुख्य कलियुग का मंत्र।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी गीत

काँटे बुहार दूँगा!

❑गोपालदास 'नीरज'

तुम झूम झूम गाओ, रोते नयन हँसाओ,
मैं हर नगर डगर के काँटे बुहार दूँगा।

भटकी हुई पवन है,
सहमी हुई किरन है,
न पता कहीं सुबह का,
हर ओर तम गहन है,
तुम द्वार द्वार जाओ, परदे उतार आओ,
मैं सूर्य-चाँद सारे भू पर उतार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

गीला हरेक आँचल,
टूटी हरेक पायल,
व्याकुल हरेक चितवन,
घायल हरेक काजल,
तुम सेज सेज जाओ, सपने नये सजाओ,
मैं हर कली अली के पी को पुकार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

विधवा हरेक डाली,
हर एक नीड़ खाली,
गाती न कहीं कोयल,
दिखता न कहीं माली,
तुम बाग़ बाग़ जाओ, हर फूल को जगाओ,
मैं धूल को उठाकर सबको बहार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

मिट्टी उजल रही है,
धरती सँभल रही है,
इन्सान जग रहा है,
दुनियाँ बदल रही है,
तुम खेत खेत जाओ, दो बीज डाल आओ,
इतिहास से हुई मैं गलती सुधार दूँगा।
तुम झूम झूम गाओ।

(प्राण-गीत से-साभार)

एक सीढ़ी और

❑डॉ.कुँवर बेचैन

एक सीढ़ी और चढ़ आया
समय इस साल,
जाने छत कहाँ है?

प्राण तो हैं प्राण
जिनको देह-धनु से
छूटना है,
जिन्दगी - उपवास
जिसको शाम के क्षण
टूटना है,
हम समय के हाथ से
छूटे हुए रूमाल,
जाने छत कहाँ है?

यह सुबह, यह शाम
बुझते दीपकों की
व्यस्त आदत,
और ये दिन-रात
कोने से फटे
जख्मी हुए खत,
हथेली भी हुई है
मकड़ियों का जाल,
जाने छत कहाँ है?

('श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन' से-साभार)

राजस्थान-समाचार

अर्जुनदेव चड्ढा एवं रामचरण आर्य सम्मानित

कोटा। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१८ में सक्रियता पूर्वक कार्य करने के लिए आर्य समाज कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा एवं रामचरण आर्य का दिल्ली में सम्मान किया गया। आर्य समाज कोटा के आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१८ में सक्रिय भागेदारी निभाकर कार्यक्रम को सफल बनाने वाले आर्य कार्यकर्ताओं का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सम्मान किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज पंजाबी बाग में आयोजित समारोह में आर्य शिरोमणि महाशय धर्मपाल जी की उपस्थिति में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य एवं महामंत्री विनय आर्य ने आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक महासम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा एवं समिति के सह संयोजक रामचरण आर्य को सम्मानित किया। सम्मान के इस अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा एवं रामचरण आर्य को ओम् का केसरिया पटका पहनाकर अभिवादन किया गया साथ ही स्मृति चिन्ह एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। शास्त्री जी ने बताया कि श्री चड्ढा के नेतृत्व में अब तक २२ परिचय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किये जा चुके हैं। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सतीश चन्द्र चड्ढा, अरुण वर्मा, जोगेन्द्र खट्टर, सुरेन्द्र चौधरी, योगेश आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता, ओम प्रकाश आर्य तथा श्रीमती उषा किरण सहित महासम्मेलन में विभिन्न समितियों के माध्यम से सफलतापूर्वक कार्य करने वाले आर्यजन उपस्थित थे। *(अग्निमित्र शास्त्री)*

आर्य समाज ने लगाई वैदिक साहित्य स्टाल

कोटा, १० दिसम्बर। जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले में आर्य समाज द्वारा वैदिक साहित्य की स्टॉल लगाई गई। इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर के देवेन्द्र शास्त्री ने बताया कि जयपुर में प्रथम बार राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक मेले में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक साहित्य की स्टॉल लगाई गई जिसका उद्देश्य लोगों में वेद, उपनिषद, दर्शन इत्यादि सहित समस्त वैदिक साहित्य सरलता से उपलब्ध कराना है। इस अवसर पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उपप्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री और डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता ने पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन किया। पुस्तक स्टॉल पर वैदिक साहित्य से संबन्धित जिज्ञासाओं का समाधान किया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

कानपुर-समाचार

विमोचन एवं सम्मान कार्यक्रम

२२.११.१८। 'बटोही' साहित्यिक संस्था कानपुर के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में डा.अशोक कुमार गुप्त 'अशोक' की सोलहवीं सद्यः प्रकाशित दोहा संग्रह 'सात सौ सतहत्तर' का विमोचन डा.कृष्ण गोपाल दीक्षित 'दद्दा' की अध्यक्षता में किया गया जिसमें मुख्य वक्ता श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने कृति पर समीक्षात्मक वक्तव्य दिया। विशिष्ट वक्ता के रूप में चन्द्रभान 'चन्द्र' ने कृति को जन सामान्य से ले कर साहित्यकारों तक के लिए उपयोगी बताया। डा.अशोक द्वारा कृति के सृजन का उद्देश्य स्पष्ट किया गया। इसके साथ दोहा संग्रह पर बी.डी.सिंह 'सत्य प्रिय', सत्यपाल सिंह सजग तथा आदित्य कुमार कटियार ने भी अपने विचार रखे। डा. अशोक को उनके गीत संग्रह 'बदल गए परिवेश' को उ.प्र.हिन्दी संस्थान द्वारा नजर अकबराबादी पुरस्कार मिलने पर संस्थापक विनम्र बाल साहित्य संस्थान उ.प्र. तथा सम्पत कुमार मिश्र 'भ्रमर बैसवारी' सहित अनेक शुभचिन्तकों ने डा.अशोक को उपहार, बधाई एवं शुभकामनाएँ देकर सम्मानित किया। निखिल प्रकाशन आगरा की ओर से डा.अशोक, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', भ्रमर बैसवारी, सत्यपाल सजग सत्यप्रिय सहित एक दर्जन साहित्यकारों को समृति चिन्ह एवं बैग देकर विशिष्ट सम्मान दिया। कार्यक्रम में श्रीमती मधु श्रीवास्तव, डा.अजय कुमार सिंह, डा.राजीव मिश्रा, चक्रधर शुक्ल, रमेश मिश्र, धीरेन्द्र श्रीवास्तव, वन्दना गुप्ता, रामदेवी गुप्ता, अंजना कुमार आदि साहित्यप्रेमियों की उपस्थिति रही। संचालन आदित्य कुमार कटियार 'अजीब' ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन ललित गुप्ता एडवोकेट ने किया।

लखनऊ-समाचार

'फ्राडियर और नीमपागल' का लोकार्पण

श्री महेशचंद्र द्विवेदी, पूर्व पुलिस महानिदेशक, उ.प्र. द्वारा लिखित पुस्तक 'फ्राडियर और नीमपागल' का लोकार्पण 'ज्ञान प्रसार संस्थान' के तत्वावधान में दिनांक १७ दिसम्बर २०१८ को डॉ.रंगनाथ मिश्र 'सत्य' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। न्यायमूर्ति श्रीनाथ सहाय, श्री के.विक्रम राव एवं डा.बसन्त कुमार तड़ियाल का गरिमामय मुख्य आतिथ्य रहा। श्री देवकी नंदन शांत ने कुशल संचालन किया।

मुख्य वक्ता श्री संजीव जायसवाल 'संजय' ने अपने वक्तव्य में इसे व्यंग्यात्मक शैली में लिखित संस्मरणों की अनूठी पुस्तक बताया। मुख्य अतिथियों ने पुस्तक के अनेक रोचक प्रसंग पढ़े, जो श्रोताओं के मन को छू गये। श्री विक्रम राव ने 'अपरिक्वता' शीर्षक के संस्मरणों को साहसपूर्ण व्यक्तित्व की स्वीकारोक्ति बताया। अध्यक्षीय वक्तव्य में सत्य जी ने संस्मरणों को रोचक होने के अतिरिक्त सामान्य जन के लिये अत्यंत ज्ञानवर्धक बताया। श्री देवकी नंदन शांत ने पुस्तक के अनेक लेखों की आंचलिकता को रेखांकित कर उन्हें यथार्थ दर्पण बताया। अन्त में 'ज्ञान प्रसार संस्थान' की अध्यक्षा श्रीमती नीरजा द्विवेदी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हरियाणा-समाचार

वैदिक यज्ञ भजन प्रवचन एवं अभिनन्दन समारोह

झज्जर। स्वामी शक्तिवेश जी के अनुज पं.जयभगवान आर्य के संयोजकत्व में टीला सिलानी गेट मोहल्ला झज्जर में वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। ब्र.सुभाष आर्य यज्ञ के ब्रह्मा रहे। कु.नम्रता आर्य, देवेन्द्र, विवेक, कुनाल

आर्य आदि होनहार बच्चों को वैदिक संस्कार से ओतप्रोत करने के लिये मुख्य यजमान बनाया गया। ६०वर्षीय मा.पन सिंह जी आर्य ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर संजय यादव खेड़ी खुम्मार, श्री चन्द्रपाल जी जहाजगढ़ माजरा, प्रा.द्वारका प्रसाद आर्य समाज झज्जर प्रधान, श्री भगवान सिंह आर्य, श्री ओम प्रकाश सुहरा, श्री रामकरण कलोई, ओमप्रकाश यादव, चमनलाल यादव, श्रीमती रोशनी देवी आदि उपस्थित थे। पं.जयभगवान आर्य ने कहा वैदिक ज्ञान सत्य पर आधारित विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। जो व्यक्ति वैदिक सिद्धान्तों का मन, वचन, शरीर से पालन करता है उसका सर्वांगीण विकास होता है। श्री संजय यादव ने बताया कि निष्काम भाव में परोपकार करने से जीवन सफल होता है। जिसकी कथनी में कोयल सी चहक, करणी में फूलों सी महक और प्रेम नरमी ही जिसकी सुगन्ध होती है उसे ईश्वर का आनन्द मिलता है। श्री लाला रामअवतार, मामन सैनी, रतीराम आर्य, पं.राम किशन दीक्षित, रामोतार दीक्षित, आत्माराम, शिवचरण आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सक्रिय कार्यकर्ताओं को वैदिक साहित्य से सम्मानित किया गया। वेदप्रिय आर्य एवं भूराज प्रिय आर्य ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(जयभगवान आर्य)*

सीतापुर-समाचार

अवधेश शुक्ल सम्मानित

'संस्कार भारती' सीतापुर के तत्वावधान में गत सप्ताह नटराज पूजन समारोह का हिन्दी सभा भवन, शहीद लालबाग उद्यान सीतापुर में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पद्मश्री बाबा योगेन्द्र जी ने हिन्दी साहित्य परिषद ब्रह्मपुरी सीतापुर के अध्यक्ष पं.अवधेश शुक्ल को 'काव्य कला साधक सम्मान' प्रदान किया। इस अवसर पर काव्य संध्या का भी आयोजन किया गया। समारोह में श्री अम्बरीश श्रीवास्तव (वास्तुकार अभियन्ता) नगर अध्यक्ष, ऋचा दीक्षित, दिनेश मिश्र 'राही', कवयित्री विनोदिनी रस्तोगी, कमलेश मौर्य मृदु इत्यादि साहित्यकारों ने भाग लिया।

टाण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा का 127वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज टाण्डा का १२७वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक २० से २३ नवम्बर २०१८ तक डी.ए.वी.एकेडमी टाण्डा परिसर में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय दिल्ली, डा.ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी, पं.दीनानाथ शास्त्री लखनऊ, श्री दीक्षेन्द्र आर्य हरियाणा, आर्य जगत के प्रसिद्ध कवि डा.सारस्वत मोहन मनीषी दिल्ली, श्री कल्याण वेदी रुड़की, श्री युगल किशोर शास्त्री आर्य भजनोपदेशक हरदोई, स्वामी वीरेन्द्र परिव्राजक लखनऊ, आचार्य सत्य प्रकाश आर्य बाराबंकी, कुलपति आचार्य नागेन्द्र शास्त्री निःशुल्क गुरुकुल अयोध्या, श्री संजय सत्यार्थी पटना आदि ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ चतुर्वेद शतकम् यज्ञ से हुआ जिसके ब्रह्मा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय थे तथा वेद पाठ गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के विद्यार्थी श्री मनोज आर्य एवं श्री कुलदीप आर्य ने किया। आचार्य श्रोत्रिय जी ने यज्ञ की व्याख्या वैज्ञानिक ढंग से की तथा यज्ञ की महत्ता एवं वेदमंत्रों के गूढ़ अर्थों को बहुत ही सरल ढंग से प्रस्तुत किया जिसे सुधिजन हिन्दू-मुस्लिम सभी ने ग्रहण किया।

दिनांक २० नवम्बर को यज्ञोपरान्त प्रातः १०.३० बजे दीप प्रज्ज्वलन से ध्वजा रोहण आर्य जगत् के उद्भट विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ, ध्वजगीत मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज टाण्डा की संगीत अध्यापिका कु.अस्मिता तथा उनकी सहयोगी छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया एवं डी.ए.वी.एकेडमी के छात्रों ने ध्वज सम्मान परेड की। आर्यजन, बालक, बालिकायें पंक्तिबद्ध भारी संख्या में उपस्थित थे, जय नारों से आकाश गुंजायमान हो रहा था।

२० नवम्बर को ही अपराह्न २ बजे से नगर में शोभा यात्रा की एक मनमोहक झांकी जो सम्पूर्ण नगर को आकर्षित कर रही थी, निकाली गयी। शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक सभा तथा श्री आनन्द कुमार आर्य प्रधान आर्य समाज टाण्डा ने किया। इस यात्रा में घोड़े पर सवार महाराजा प्रलय एवं रानी लक्ष्मीबाई की झांकी, डी.ए.वी.एकेडमी के छात्रों की झांकी, चारों वेदों का प्रदर्शन, यज्ञ की झांकी, वीरांगनाओं का शौर्यप्रदर्शन एक तरफ जहाँ प्राच्य सभ्यता, संस्कार का गौरव वर्णित कर रहा था वहीं जनमानस आर्य संस्कृति के प्रदर्शन को सराह रहा था। शोभायात्रा टाण्डा चौक में पहुंचने पर हिन्दू-मुस्लिम जनसमुदाय की भीड़ को स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि टाण्डा में स्वर्गीय मिश्रीलाल आर्य जी के त्याग व तपस्या से रोपित बीज आर्य कन्या इंटर कालेज गंगा-जमुनी संस्कृति का साक्षात उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने आर्य समाज का उद्देश्य एवं जनमानस के लिए किये गए कार्यों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना कुरीतियों तथा पाखण्डों को दूर कर मनुष्य-मनुष्य में सौहार्द स्थापित करने के लिए किया था।

दिनांक २१ नवम्बर २०१८ को प्रातःकाल यज्ञ के पश्चात आर्य युवा सम्मेलन अयोध्या गुरुकुल के कुलपति आचार्य नागेन्द्र शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसका संचालन कर्मवीर युवक दीक्षेन्द्र आर्य हरियाणा तथा टाण्डा के दिवाकर आर्य ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में डी.ए.वी.एकेडमी के छात्र-छात्राओं द्वारा योग एवं कराटे की मनमोहक प्रस्तुति तथा मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज टाण्डा के अन्तर्गत चल रहे वीरांगनादल की छात्राओं द्वारा शौर्य प्रदर्शन किया गया। स्वामी जी ने युवा-युवतियों के प्रदर्शन को सराहते हुए सभी को आशीर्वाद देते हुए मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज तथा डी.ए.वी.एकेडमी की प्रधानाचार्याओं को धन्यवाद दिया तथा प्रधान आनन्द जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। रात्रिकालीन सत्र में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता डा.ज्वलंत कुमार शास्त्री ने सत्यार्थ प्रकाश को एक कालजयी ग्रन्थ बतलाया, सत्यार्थ प्रकाश एक जीवन शैली है, यथार्थ का ज्ञान है, मानवमात्र को सत्य के ग्रहण करने असत्य को छोड़ने के लिये उद्यत करता है। अध्यक्षीय भाषण में आचार्य श्रोत्रिय जी ने बहुत ही सरल ढंग से सत्यार्थ प्रकाश की गुणवत्ता को समझाया, हिन्दू मुस्लिम सभी पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

२२ नवम्बर को प्रातः यज्ञ, भजन एवं उपदेश के पश्चात् शंका-समाधान का आयोजन हुआ, यह आर्य समाज टाण्डा का बहुत ही प्रसिद्ध कार्यक्रम है, प्रतिवर्ष शास्त्रार्थ होते थे, अब शास्त्रार्थ तो नहीं होते किन्तु लोग प्रश्न करते हैं जिसका विद्वानों द्वारा उत्तर दिया जाता है। श्रोताओं की तरफ से तमाम प्रश्न पूछे गये जिसका आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय एवं डा.ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने उत्तर देकर उनकी शंकाओं का समाधान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं.दीनानाथ शास्त्री ने की। मध्याह्न में महिला सम्मेलन राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्रीमती डा.स्वदेश मल्होत्रा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसका संयोजन श्रीमती अनिता सिंह प्रधानाचार्या डी.ए.वी.एकेडमी एवं डॉ.प्रशिषा श्रीवास्तव प्रधानाचार्या मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज ने किया। इस कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा शिक्षाप्रद गीत एवं समाज को जागृत करने वाली नाटिकाओं का भी प्रस्तुतीकरण किया गया। रात्रिकालीन सत्र में अंधविश्वास निवारण सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें आर्य जगत् के दो उद्भट विद्वान आचार्य श्रोत्रिय एवं डा.ज्वलन्त कुमार शास्त्री के बहुत ही सारगर्भित व्याख्यान हुए जो श्रोताओं को ग्राह्य हुए और सराहे गये। तत्पश्चात् कवि सम्मेलन आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता दिल्ली से पधारे प्रसिद्ध कवि डा.सारस्वत मोहन मनीषी ने की तथा संचालन पटना से आये श्री संजय सत्यार्थी ने किया। अनेक कवियों के काव्यपाठ हुए जिनमें प्रमुख हैं- ब्र.श्याम मिश्र, श्री सत्यार्थी टाण्डा, श्रीमती अर्चना शास्त्री, आचार्य डा.नागेन्द्र शास्त्री। मनीषी जी की कविताओं ने श्रोताओं का मन मोह लिया। श्रोताओं की मांग पर दूसरे दिन भी कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसका संचालन श्री दिवाकर ने किया।

दिनांक २३ नवम्बर को प्रातःकालीन सत्र में यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। आर्य समाज टाण्डा की ओर से मध्यह्न में ५०० निर्धन व्यक्तियों को कम्बल बांटे गये। समापन समारोह सत्र 'वेद सम्मेलन' से आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने की।

सायंकालीन सत्र में विद्वानों के उपदेश एवं भजन हुए। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया तत्पश्चात् शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(वीरेन्द्र आर्य, उपप्रधान)*

आर्य जगत् एवं संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान्
पद्मश्री डॉ.कपिलदेव द्विवेदी शताब्दी समारोह

ज्ञानपुर (भदोही) विश्वभारती अनुसंधान परिषद् द्वारा आर्य जगत् एवं संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् पद्मश्री डा.कपिलदेव द्विवेदी की जन्मशती पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्वकुलपति प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने कहा कि डा.कपिलदेव द्विवेदी वेद, वेदांग, संस्कृत व्याकरण एवं भाषाविज्ञान के विद्वान् थे। उन्हें ज्ञान की थाती डा. कपिलदेव द्विवेदी जैसे विद्वान से प्राप्त हुई है। संस्कृत साहित्य का ज्ञान हिन्दी भाषा के माध्यम से डा.द्विवेदी ने जन सामान्य तक पहुँचाया। उनके अमिट व्यक्तित्व की छाप जनमानस में अंकित है। डा.द्विवेदी जी को उनके कर्मठ व्यक्तित्व एवं कृतित्व के लिए हमेशा याद किया जाता रहेगा। आप संस्कृत साहित्य के उन्नायक थे। डा.कपिलदेव द्विवेदी ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर ज्ञान की ज्योति जलाई।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि नासा वैज्ञानिक डा.ओम प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि डा.कपिलदेव द्विवेदी जी अपने व्यक्तित्व से अत्यंत लोकप्रिय रहे हैं। आपने वेदों का ज्ञान वेदामृत ग्रंथमाला के माध्यम से सरल भाषा में प्रस्तुत किया। वेद अपौरुषेय हैं और उसका ज्ञान सार्वभौमिक है। वेदों में वर्णन है कि सूर्य की किरणों से ध्वनि निकलती है जिसे नासा ने अब स्वीकार किया है। इस ध्वनि में स्वर और अनुस्वार हैं। इसी प्रकार संस्कृत भाषा वैज्ञानिक भाषा है। नासा के वैज्ञानिकों ने संस्कृत भाषा का प्रयोग किया तो रेडियो तरंगे सीधे शनि तक पहुँच गईं। द्विवेदी जी के योगदान पर प्रकाश डालते हुए विशिष्ट अतिथि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.राजाराम शुक्ल ने कहा कि आपने संस्कृत साहित्य, व्याकरण, भाषाविज्ञान आदि विधाओं को समृद्ध बनाया है। आप संस्कृत भाषा के सरलीकरण के उन्नायक हैं। आपके ग्रन्थों से लाखों ने संस्कृत सीखी है। प्रत्येक छात्र और अध्यापक के लिए आपके ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

डॉ.प्रशस्यमित्र शास्त्री ने संस्कृत श्लोकों के द्वारा डा.द्विवेदी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। निर्मल शरण महाराज जी ने गीतों के माध्यम से अपना सम्मान व्यक्त किया। सभा की अध्यक्षता करते हुए काशी विद्यापीठ के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो.प्रभुनाथ द्विवेदी ने कहा कि डा.द्विवेदी संस्कृत, संस्कृति और संस्कार के प्रतिमान थे। वे संस्कृत साहित्य जगत के स्तम्भ थे। समारोह में डा. द्विवेदी की स्मृति में प्रकाशित ग्रंथ कपिल-कौस्तुभ का विमोचन मुख्य अतिथि प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र एवं मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर संस्कृत साहित्य विशिष्ट सेवा के लिये पद्मश्री डा.कपिलदेव द्विवेदी स्मृति विश्वभारती सम्मान प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो.राजाराम शुक्ल, प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय, डा.प्रशस्यमित्र शास्त्री को प्रदान किया गया तथा शताब्दी सम्मान प्रो.प्रभुनाथ द्विवेदी, श्री निर्मल शरण, डा.विभुराम मिश्र, श्री राजाराम गुप्ता, श्री अब्दुल हादी, डा.अशोक कुमार मिश्र, डा.रामशिरोमणि होरिल, श्री राजेन्द्र जायसवाल, श्री परमानन्द मालवीय, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री अजीत कुमार आर्य तथा श्री सत्यदेव गुप्त को प्रदान किया गया। स्वागत भाषण देते हुए डा.विद्याशंकर त्रिपाठी ने पद्मश्री द्विवेदी जी को आधुनिक संस्कृत का प्रणेता बताया तथा मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन संस्था के अध्यक्ष डा.भारतेन्दु द्विवेदी ने किया। आरम्भ में वैदिक मंगलाचरण डा.माया त्रिपाठी एवं डा.जया त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया एवं सरस्वती वंदना आस्था, आर्ची एवं आभा द्वारा प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर अब्दुल हादी, राजाराम जायसवाल, राजेन्द्र जायसवाल, डा.विभूराम मिश्रा, डा. शिवनरेश मिश्रा, डा.बी.सी.रजवार, पूर्व शिक्षा निदेशक उच्चशिक्षा डा.महेन्द्र राम, डा. होरिल, डा.के.एस.उपाध्याय, विंध्यवासिनी त्रिपाठी, डा.बी.पाण्डेय आदि बड़ी संख्या में संस्कृत प्रेमी, विद्वान और आर्यजन उपस्थित थे।

स्वामी दर्शनानन्द के सच्चे उत्तराधिकारी थे पद्मश्री डॉ.कपिलदेव द्विवेदी

-कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

अपने अतुलनीय योगदान द्वारा भारतीय वाङ्मय की गौरव-गरिमा के विस्तारक डॉ.कपिलदेव द्विवेदी के दर्शनों का प्रथम अवसर मुझे सन् १९७५ में देश की राजधानी दिल्ली में आयोजित आर्यसमाज शताब्दी के ऐतिहासिक समारोह के अवसर पर प्राप्त हुआ था। उनके महनीय व्यक्तित्व, सौम्य एवं शालीनता की समुज्ज्वल छवि मेरे हृदय पटल पर आज भी अंकित है। एक वर्ष के अन्तराल में सन् १९७६ में आर्य समाज कोलकाता (प.बंगाल) के प्रधान स्व.सीताराम आर्य के सुपुत्र श्री ओम प्रकाश आर्य, दिल्ली के विवाह के सम्बन्ध में मुझे श्रद्धेय द्विवेदी जी के निवास स्थान जाने तथा उनके सान्निध्य एवं दर्शनों का सौभाग्य भी सुलभ हुआ था।

मेरे लिए वह दिन भी अविस्मरणीय है, जब उ.प्र.के पूर्वांचल की सर्वप्रमुख आर्य समाज टाण्डा, जनपद अम्बेडकर नगर का ऐतिहासिक सप्तदिवसीय स्थापना शताब्दी समारोह मेरे संयोजकत्व में आयोजित हुआ, जिसमें 'वेद-सम्मेलन' की अध्यक्षता हेतु आचार्य द्विवेदी को मैंने आमंत्रित किया था। उन्होंने 'वेद सम्मेलन' के अध्यक्ष के रूप सब सत्य विद्याओं के ग्रंथ 'वेद' के शोधपूर्ण विवेचन द्वारा वेदों की प्रामाणिकता एवं प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिये थ। यद्यपि आज सम्मान्य द्विवेदी जी इस संसार में नहीं हैं, तथापि उनकी कीर्ति कौमुदी का प्रसार आज भी सर्वत्र परिलक्षित हो रहा है और निविड़ तम में उनकी दिव्य ज्योत्स्ना देश और समाज का मार्गदर्शन करती रहती है।

आर्य जगत् के धुरंधर विद्वान् वाग्मी स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के शिवसंकल्प को आचार्य द्विवेदी ने साकार किया तथा उनके द्वारा संस्थापित लोकविख्यात गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के कुलपति पद को सुशोभित कर स्वयं को उनका सच्चा उत्तराधिकारी सिद्ध किया।

'पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठति कालिदासः' की लोकोक्ति के अनुरूप जब कभी प्राच्य विद्या विशारदों की गणना होगी तो आचार्य प्रवर द्विवेदी को प्रथम पंक्ति में प्रतिष्ठित किया जायेगा-ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, पिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

लखनऊ-समाचार

ऊर्मिला चौधरी का आकस्मिक निधन

श्रीमती ऊर्मिला चौधरी धर्मपत्नी श्री देवेन्द्रनाथ चौधरी, रामाधीनसिंह रोड, डालीगंज (हसनगंजपार) लखनऊ का आकस्मिक निधन दि. १२.१२.१८ को रात्रि ९.३० पर हृदयगति रुकने के कारण हो गया। आपका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक विधि से मंत्रोच्चार एवं हवन सामग्री घृत आहुतियों के मध्य पं.सन्तोष कुमार वेदालंकार, पं.दीनानाथ शास्त्री, वीरेन्द्र स्वामी सरस्वती डॉ. अरविन्द नाथ पाण्डेय इत्यादि आर्य विद्वानों की देखरेख में १३.१२.१८ को भैंसाकुण्ड शवदाह स्थन पर किया गया; जहाँ बड़ी संख्या में सामाजिक एवं पारिवारिक जनों ने आपको अंतिम विदाई दी। दिनांक १५.१२.१८ शनिवार को आपकी पुण्य स्मृति में शान्तियज्ञ आपके आवास पर पं.दीनानाथ शास्त्री के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ; जिसमें नगर के अनेक सामजिक, धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और यज्ञ में आहुतियाँ देकर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वीरेन्द्र स्वामी, आर.एन. सक्सेना, विश्वमित्र, सर्वमित्र, प्रेममुनि वानप्रस्थी, नवनीत निगम प्रधान जिला सभा, प्रत्यूषरत्न पाण्डेय, राजीव बत्रा एवं पाल प्रवीण सहित सम्भ्रान्त नर-नारियों से यज्ञस्थल भरा हुआ था। नगर की आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण बड़ी संख्या में मौजूद थे। चौधरी परिवार के सभी सदस्य यज्ञवेदी पर आसीन थे। श्रद्धांजलि देते हुए वक्ताओं ने स्व.ऊर्मिला जी के जीवनादर्शों और समन्वयमूलक व्यवहार पर प्रकाश डाला। परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति सद्गति एवं पारिवारिक जनों को इस दारुण व्यथा को सहन करने हेतु धैर्य धारण करने की प्रार्थना की गई।

बताते चलें कि दिवंगता ऊर्मिला चौधरी का जन्म रायबरेली जनपद के बछरावाँ के सन्निकट सेहगरी नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता स्व.रामसनेही नम्बरदार थे। ऊर्मिला जी ने पूर्व माध्यमिक विद्यालय गुड़म्बा में प्र.अध्यापिका के रूप में कार्य किया और २००८ में सेवानिवृत्त हुईं। आप अपने पीछे पति श्री देवेन्द्र नाथ चौधरी; तीन पुत्रों-नरेन्द्र, आनन्द, आलोक; पुत्री ज्योति; पौत्र-हर्षित, पीयूष, प्रखर, यश; पौत्री-वैशाली तथा नातिन श्रुति को छोड़ गई हैं। आपके पुत्र श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट वर्तमान में जिला सभा लखनऊ के उपप्रधान हैं। *(सं.सू.-पाल प्रवीण)*

आर्य लोक वार्ता की श्रद्धांजलि

आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने ऊर्मिला चौधरी को श्रद्धांजलि देते हुए इसे चौधरी परिवार की अपूरणीय क्षति बताया। आपने कहा है कि एक बड़े परिवार को सूत्रबद्ध करते हुए उसके विकास एवं समन्वय के लिए ऊर्मिला जी को सदैव याद किया जायगा। आप स्वनामधन्य नारायणदीन चौधरी की पुत्रवधू थीं। श्री देवेन्द्र बाबू के साथ ही आनन्द, आलोक एवं नरेन्द्र इत्यादि पुत्रों तथा पुत्रियों को आपने प्रेम एवं वात्सल्य रस से सिंचित किया। ऊर्मिला जी ने 'माता निर्माता भवति' के कथन को चरितार्थ किया है। आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह के स्वागताध्यक्ष आर्य युवा नेता श्री सर्वमित्र शास्त्री ने स्व. ऊर्मिला जी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया है।

आचार्य विश्वव्रत शास्त्री के जन्मदिवस पर शुभकामनाएँ

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के संस्थापक, वेद और उपनिषदों के व्याख्याता आचार्य विश्वव्रत जी का जन्म दिवस दिनांक १२ दिसम्बर २०१८ दिन बुधवार को आर्ष गुरुकुलम् जानकीपुरम में मनाया गया। डॉ.सत्यकाम आर्य, श्री पाल प्रवीण, नवीन कुमार सहगल, डॉ.वेद प्रकाश आर्य सहित अनेक व्यक्तियों ने आचार्य जी के जन्मदिवस पर बधाई दी तथा यह कामना परमपिता परमेश्वर से की है कि आचार्य जी निरन्तर वैदिक विचारधारा के प्रचार प्रसार के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाते रहें तथा नवीन और स्वस्थ आध्यात्मिक समाज के निर्माण की दिशा में संलग्न रहें।

आर्य समाज गोमती नगर का वार्षिकोत्सव

विनय खण्ड-४ स्थित पार्क में आर्य समाज गोमती नगर का वार्षिक उत्सव प्रातः सायं दो सत्रों में दिनांक ११ नवम्बर २०१८ को मनाया गया। दोनों सत्रों का प्रारम्भ देवयज्ञ से हुआ; जिसमें ब्रह्मा के दायित्व का निर्वाह श्रीमती शैलजा ने किया। आर्य समाज के मंत्री श्री बालगोविन्द पालीवाल द्वारा प्राप्त सूचनानुसार प्रख्यात वैदिक विदुषी डॉ.(श्रीमती) निष्ठा विद्यालंकार, जाने माने वेदोपदेशक पं.दीना नाथ शास्त्री, भजनोपदेशक श्री सत्य प्रकाश आर्य, श्री रमेश चन्द्र आर्य एवं जिला आर्य सभा के अध्यक्ष श्री नवनीत निगम आदि मंच पर मौजूद रहे। श्री सत्य प्रकाश आर्य एवं श्री रमेशचन्द्र आर्य ने ईश्वर महिमा का गायन किया तथा श्रीमती निष्ठा जी ने यजुर्वेद के मंत्र (१७/९१) की व्याख्या की और सभी को वेद के पढ़ने और पढ़ाने का संदेश दिया। पं.दीनानाथ शास्त्री ने आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रसिद्ध कृति सत्यार्थ प्रकाश के हवाले से महिलाओं एवं शूद्रों के उत्थान हेतु किये गये प्रयासों की चर्चा की। शास्त्री जी ने जोर देकर कहा-'वेद ईश्वरीय हैं ईश्वर द्वारा रचित हैं तथा वैदिक धर्म सनातन धर्म है। आर्य समाज के अध्यक्ष डॉ.वी.पी.कपूर एवं संरक्षक पं.मनोज मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया। *(सौरभ सिन्हा)*

'अबोध' को 'छन्दश्री' सम्मान

वरिष्ठ साहित्यकार दयानन्द जड़िया 'अबोध' का साहित्य परिषद नर्मदापुरम होशंगाबाद म.प्र. द्वारा सम्मान किया गया और उन्हें 'छन्दश्री' अलंकरण से अलंकृत किया गया। ज्ञातव्य है कि अबोध जी ने अनेक मात्रिक व वर्णिक छन्दों का नूतनान्वेषण किया है और वर्ष १९१४ में उनकी एक पुस्तक त्रिमूर्ति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुई थी-'ये हैं अबोध के नवीन छन्द'-जिसमें उनके ३३ छन्दों के साथ अनेक छन्दों में सिंहावलोकन विधा का सफल प्रयोग हुआ है।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में